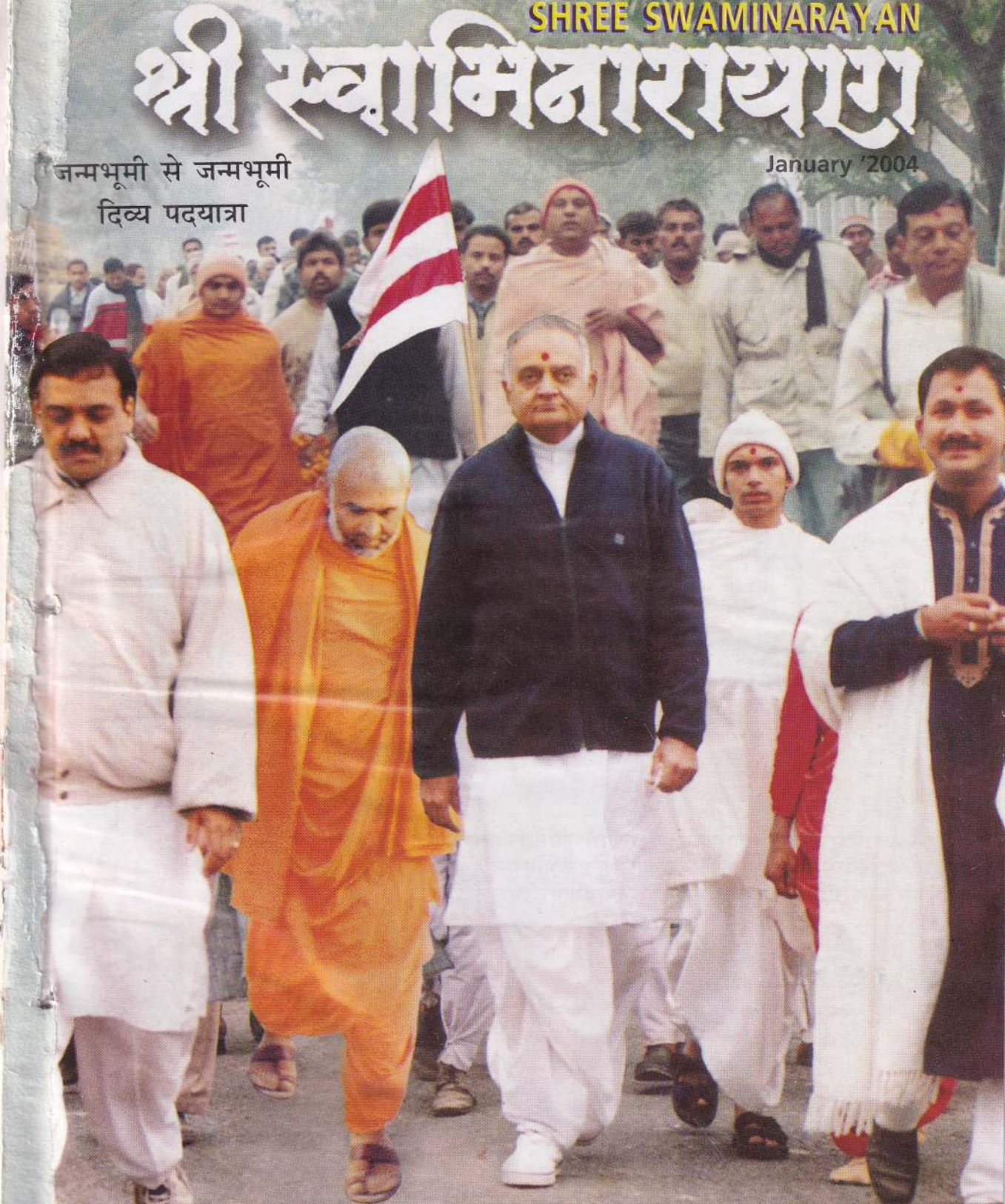
SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

जन्मभूमी से जन्मभूमी
दिव्य पदयात्रा

January '2004



प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद. Publiser:-Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



पदयात्रा के पहले अयोध्या मंदिर में मंगल आरती उतारते प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



पदयात्रा छपैया मंदिर के प्रवेशद्वार पर पहुंच कर सबको दर्शन देते हुवे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री साथ में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी



सर्वोपरी श्री बाल स्वस्रूप घनश्याम महाराज के दिव्य चरणो से भूमि महान अलौकिक तीर्थस्रूप बनी है। अपने इष्टदेव के अपर स्वस्रूप के दिव्य चरणो से पुनः ये भूमि धन्य बनी है। साथ में मनीषकुमार(बाल लालजी महाराज के मामाश्री) तथा हजारो हरिभक्त तथा संत ।



लींबडी मंदिर में श्री घनश्याम महाराज की आरती उतारते प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



वडनगर मंदिर में पारायणा के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त करते महंत स्वा. हरिसेवादासजी ।



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु.
आचार्य महाराजश्री १००८ श्री
तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२१३३८३५ (मंदिर)
७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स
०७९-७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ३०१-००
विदेश२००१-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

SEREE SWAMINARAYAN
श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ३ जनवरी -२००४

अ नु क्र म णि का

१. अरमदीयम २

२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा एवं भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा ३

३. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की अयोध्या से छपैया धामकी पदयात्रा धूमधाम से सम्पन्न हुई ५

४. शिक्षापत्री एक अध्ययन ६

५. हरिनाम दर्शनं पुण्यम् ७

६. अपना बाप कौन ? १०

७. हनुमानजी को हराया १२

८. शक्ति सद्गुरु संतकी १४

९. मातृऋण १५

१०. बाल वाटिका १६
(१) जीवन का हिसाब किताब कब करे
(२) युवानी में मौत
(३) बड़े की बात बड़ी

११. सत्संग वृतांत १८

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २१३२१७०, २१३६८१८. फेक्स : २१७६९९२.

अ स्म दी य म्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

सर्वोपरि भगवान श्री स्वामिनारायण ने आज्ञा किया है कि "व्यर्थ कालो न नेतव्यो । भक्ति भगवतो विना" भगवान का भक्त विना काम के अपना समय विताता नहीं है । संसार में रहने के लिये प्रवृत्ति तो करना ही चाहिए । संसार संबन्धी अर्थात धन कमाना या परिवार की देखरेख करना इसके बिना तो कोई रह नहीं सकता । इस लिए ऐसा कार्य सदैव करते ही रहते है । लेकिन जब यह प्रवृत्ति न हो तब भगवान की भक्ति में मन को लगाना चाहिए । इसी सिद्धान्त को चरितार्थ करने में अपने जीवन को अपने पूज्य महाराज श्रीने लगादिया है । यह बात सारे जगत में प्रत्यक्ष हो रही है । प्रातःकाल जब धनुर्मास की धुन में उपस्थित होते हैं तब लगता है कि श्री हरि ही उपस्थित है, ऐसा स्मरण होता है । जब अयोध्या से छपैया की पदयात्रा कर रहे थे तब सतत षडाक्षरी महामंत्र स्वामिनारायण का जप करते हुए भगवत परायणता का दर्शन करा रहे थे ! ऐसी भक्ति जीव के हृदय में उतर जाय तो एकांन्तिक भक्त होने की योग्यता प्राप्त होजाती है ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
– शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

दिसम्बर - २००३

२. प.भ.दिलीप भावसार के यहां शादी के अवसर पर आशीर्वाद देने के लिए पदार्पण, नारणपुरा ।
प.भ. पुरुषोत्तमदास चुनीलाल पटेल (खंभात वाले) के यहां महापूजा के अवसर पर पदार्पण, सेटेलाइट ।
प.भ. धीरु भाई भूलाभाई पटेल के यहां पदार्पण सरसपुर ।
प.भ. मुकेशभाई अमृतलाल पटेल के ब्लुवल्ड के उदघाटन अवसर पर पदार्पण, सेटेलाईट ।

३. जेतपर (मच्छु) श्री स्वामिनारायण मंदिर (मूली देश) प्रतिष्ठा के अवसर पर पदार्पण ।

४. प.भ. प्रकाशभाई रामाभाई पटेल के पारस ओटोमोबाइल्स के उद्घाटन अवसर पर पदार्पण, सेटेलाईट ।
प.भ. सोनी बळदेवभाई दयाळजीभाई के यहां पदार्पण सेटेलाइट ।

५. ईश्वरनगर (ता.माळीया-मूलीदेश) श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पदार्पण ।
प.भ. वसंतलाल त्रिभोवनदास टांक के यहां लग्न के अवसर पर आशीर्वाद देने पदार्पण, पालडी ।
प.भ.प्रहलादभाई खोडीदास पटेल के गोल्ड पेलेस में उदघाटन अवसर पर पदार्पण, घाटलोडीया ।
प.भ.सुरेशभाई अमृतभाई पटेल (अजरापुरा वाले) के श्रीजी अन्न भंडार में पदार्पण, घाटलोडिया ।
प.भ.सुरेशभाई विठ्ठलदास के यहां पदार्पण, घाटलोडीया । (मोखासणवाले)

६. प.भ.जसुभाई वनमालीदास सोनी के यहां शादी के अवसर पर आशीर्वाद हेतु पदार्पण, नवरंगपुरा ।

७. कानपुर (उ.प्र.) श्री नरनारायणदेव हस्तक श्री स्वामिनारायण मंदिर के शीलान्यास अवसर पर पदार्पण ।

८. प.भ. कौशिकभाई जमनादास पटेल के यहां शादीके अवसर पर आशीर्वाद हेतु पदार्पण शाही बाग ।

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर जसापर (ता. घ्रांगध्रा मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर पदार्पण ।
प.भ. सुभाषभाई मगनभाई पटेल के यहां पदार्पण, घोडासर ।

१०. प.भ. कल्पेशभाई अमृतलाल चोक्सी के यहां पदार्पण, माणेकचोक ।

११. मोखासण गांव में प.भ.बळदेवभाई सोमादास पटेल के यहां पारायण पूर्णाहुति पर पदार्पण ।

१२. श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा पारायण पूर्णाहुति के अवसर पर पदार्पण । हिंमतनगर में एक हरिभक्त के यहां पदार्पण

१३ से१५ सुरेन्द्रनगर मंदिर पारायण पूर्णाहुति के अवसर पर पदार्पण, वहां से भुज (कच्छ) तथा मिर्जापुर में पदार्पण ।

१६. वडनगर मंदिर मे पारायण के उपलक्ष्य में पदार्पण ।

१७. ईश्वरपुरा गांवमें प.भ.गलबाभाई चौधरी के यहां पारायण पूर्णाहुति पर पदार्पण ।

१८. खोलडीयाद (वढवाण) गांव में प.भ. रामजीभाई हरिभाई गोहेल के यहां पारायण पर पदार्पण प्रसंग ।

१९. सरढव (जि. गांधीनगर) मंदिर में पाटेत्सव के अवसर पर पदार्पण

२१. धमासणा (कलोल) मंदिर में शाक्रोत्सव के अवसर पर पदार्पण कोठा गांव मे प.भ.भीखाभाई अंबालाला पटेल के यहां पदार्पण प.भ.सुरेशभाई विठ्ठलभाई पटेल के यहां अवसर पर आशीर्वाद हेतु पदार्पण ।

२३ से २७ अयोध्या से छपैया की पदयात्रा के अवसर पर २८ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांन्धीनगर के पाटोत्सव पर पदार्पण ।



भावि आचार्य प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की स्मरेखा

दिसम्बर - २००३

३ जनवरी २००४ को अमेरीका की धर्मयात्रा पूर्ण कर स्वदेश लौटे ।

श्रीजी महाराज के आज्ञापालक सत्संग सेवापारायण श्री हरि के प्यारे परम भक्तों के प्रति अहमदावाद नरनारायण देव निर्भयचरण कमल के परम आश्रय से प.पू.लालजी महाराज श्री १०८ श्री कौशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से आप सभी हरिभक्तो के लिये अहमदावाद मंदिर के महंत शा. स्वामी निर्गुणदासजी का प्रेम पूर्वक सभी हरिभक्तजन जय श्री स्वामिनारायण ।

विशेष में श्रीजी महाराज की कृपा से सभी हरि भक्तों में महाराज की आज्ञापालन पूर्वक उत्तम भक्ति होती होगी । उस पर परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा हो, जिससे विशेष स्मसे धर्म का पालन करके मोक्ष प्राप्त कराने वाली भगवान की परा भक्ति सदा होती रहे ऐसी शुभ कामना के साथ सभी भक्तों को विशेष स्मसे बताना यह है कि प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्र प्रसादजी महाराज श्री का चैत्र तृतीया के शुभ दिन साठ वर्ष पूर्ण हो ने से ता. २-४-२००४ से ता. ८-४-२००४ तक सप्तदिनात्मक "षष्टि पूर्ति महोत्सव" मनाने का आयोजन किया गया है । जेसमें देश विदेश में रहनेवाले अपने लाखो हरिभक्त आनेवाले है । जिसमें पारायण ज्ञानयज्ञ, महाविष्णु याग, अखंडधुन, इत्यादि धार्मिक कार्यक्रम होने वाले हैं । ऐसे दिव्यलाभ लेने से आपके गांव के लोग कैसे रह सकते है ? निश्चित ही आप सभी इस महोत्सव में आनंद प्राप्ति हेतु आवें । आप सभी के आने की प्रतिक्षा हम करेगें । आपके रहने, खाने, पीने, तथा स्वागत इत्यादि की व्यवस्था उत्तम हो सके इसलिये आपको निवेदन है कि अपने गांव से जो हरिभक्त आनेवाले हों उनकी संख्या तथा कितनें दिन स्कने वाले है, आने वाली ता. साथ हमें पहले से जानकारी करियेगा । जिससे आप सभी की व्यवस्थित सुविधा रखने में सानुकूलता रहे । यह बात मंदिर के नोटिसबोर्ड पर सूचना लिखकर सभी को जानकारी दी जियेगा । जो हरिभक्त अपने ढंग से आने वाले हों वे लोग भी हमें पूर्व जानकारी अवश्य दें । इसलिये हमारा फोन तथा फैक्स एवं पता इस प्रकार है । इसी पते पर जानकारी देने हेतु विशेष आग्रह रखियेगा । उत्सव में विदेश से आनेवाले प्रत्येक हरिभक्त अपना कार्यक्रम तथा साथ में कितने व्यक्ति आनेवाले है, उसकी जानकारी अवश्य दें ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपुर अमदावाद,
षष्टिपूर्ति महोत्सव, उतारा समिति
फोन (०७९) २१३२१३० फैक्स : (०७९) २१७६९९२

- महंत स्वामी

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की अयोध्या से छपैया धामकी पदयात्रा धूमधाम से सम्पन्न हुई

सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान भी जब कोई संकल्प करते तो उसकी पूर्ति हेतु संत-हरिभक्तों को साथ रखते थे । उसका एक मात्र कारण यह था कि जीवमात्र का कल्याण हो । वह आज भी २२५ वर्ष के बाद १००८ श्री तेजेन्द्र प्रसादजी महाराजने भी अयोध्या से महाधाम छपैया की पदयात्रा का शुभ संकल्प किया । गांव गांव या शहर शहर में इसका प्रचार नहीं किया गया था प.पू. आचार्य महारजश्री के साथ मंहन्त शास्त्री स्वा.निर्गुणदासजी जेतलपुर से पूज्य पी.पी. स्वामी कांकरिया के महंत गुरुप्रसाद स्वा. तथा हजूर कारभारी प.भ.संदीपभाई चौक्सी एवं हरिभक्तों का समुदाय दिल्ही की फ्लाईट में जाने के लिए प्रातः पधारे, लेकिन वातावरण खराब होने के कारण फ्लाईट दोपहर को ३ बजे उडी तथा दिल्ली से लखनऊ का वातावरण खराब होने से रद्द कर दी गयी । जिससे दिल्ली से बनारस फ्लाईट को जाकर उतरना पडा । वहां से टैक्सी में अयोध्या आये । अयोध्या मंन्दिर में महंत स्वामी नन्दकिशोर दासजीने उत्तम व्यवस्था की थी । अहमदावाद से निकले उसी समय से चमत्कार होने लगा । श्रीहरि का ही यह संकल्प था इसी लिए कुदरती हवामान में थोडें समय के लिये परिवर्तन आवश्यक था । ऊपर से आज्ञा हो तो परिवर्तन होता ही है । ऐसा ही यहां हुआ नियत समय पर ही पदयात्रा अयोध्या से प्रारंभ हुई । उत्तरप्रदेश की ठन्डी की कल्पना करना और उसका प्रत्यक्ष अनुभव करना इस में जमीन आसमान का अन्तर है । शरीर को कंपादे ऐसी ठन्डी लेकिन प्रातःकाल से ही ठन्डी गायब होगयी थी । चलते-चलते कितने सन्त हरिभक्तोंने गरम स्वेटर, साल, टोपी इत्यादि को निकाल दिया था । गुजरात के गांव गांव से अनगिनत हरिभक्त इस पदयात्रा में जिस किसी भी साध्य साधन से भाग लिए । प्रत्येक के जीवन में ऐसी पदयात्रा पुनः करने को मिले या नहीं लेकिन ऐसा शुभ अवसर तो जाने नहीं देना है जिसमे श्रीहरि के अपर स्वरुप के साथ उन्ही के चरण रजकण को आंखों में लगाते हुए धन्यता का अनुभव कर रहे थे । श्री स्वामिनारायण महामंत्र का उच्चाण करते हुए जहां बालघनश्याम प्रभु ने बाललीला की थी उसी मखोडाघाट पर पदयात्रा विराम की । प.पू.ध.धु महाराज श्री संतो के साथ ठाकुरजी का प्रसाद लिये छपैया के महंत स्वामी वासुदेवानंदजी यहां बडी सुन्दर व्यवस्था किये थे । ४२ कि.मी. की पदयात्रा सायंकाल ४ बजें मखोडाघाट से छपैया की अलौकिक दिव्य भूमिपर पहुंची । उस समय घनश्याम महाराज तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के जय जय से मंदिर का प्रांगण गूंज उठा । प्रथम सर्व अवतारो के अवतार पूर्ण पुरुषोत्तम अपने दादा घनश्याम महाराज का दर्शन करके प.पू.ध.धु आचार्य महाराजश्री ने प्रत्येक पदयात्रियों के श्रेय तथा कल्याणार्थ मंगलभावना के साथ पदयात्रा को पूर्ण की थी ।

(साधु धर्मप्रकाशदास एवं साधु राधारमणदास)

शिक्षापत्री एक अध्ययन

•प्रो. महादेव घोरियाणी (राजकोट)

स्वामिनारायण सम्प्रदाय में गीता जितना ही शिक्षापत्री का महत्व हैं। गीता शब्द सुनते ही स्मृतिपटल पर कृष्ण और अर्जुन दोनो ही उभर जाते है ।

''धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे ----
समवेता युयुत्सवः ।''

जीवन एक संग्राम है । इसका कोई अंत नही है । इस जीवन संग्राम में छिन्न भिन्न होकर टूटे हुए अर्जुन में श्री कृष्ण ने अमरत्व का प्राण फूंका । यही श्रीमद् भगवद् गीता है ।

२२५ वर्ष पूर्व जो कुरिवाज, अंधश्रद्धा, वहम, व्यसन, इत्यादि संग्राम में निस्तेज हुए मनुष्य के जीवन में ब्रह्मतेज का प्राण सर्वावतारी पूर्ण पुरुषोत्तम भगवान स्वामिनारायण ने फूंका वही शिक्षापत्री श्रेय प्रेय का काव्यस्मी झरना है । जिसमें २१२ श्लोक का चिन्तन किया गया है । जो अभिनव गीता है । भगवान स्वामिनारायण के समक्ष केवल एक अर्जुन ही नहीं थे बल्कि सम्पूर्ण मानवजाति थी । इस शिक्षापत्री में गीता का दोहन भी आजाता है ।

यहां प्रत्येक वर्ण था, प्रत्येक आश्रम था, स्त्री थी, पुरुष थे, आचार्य थे, साधु थे, ब्रह्मचारी थे, सभी लोग तात्कालीक परिस्थिति के वशीभूत होकर संस्कार हीन हो चुके थे । सामान्य आचार को बताने वाला कोई नही था । ठीक उसी परिप्रेक्ष्य में भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री के माध्यम से हिंसा, चोरी, असत्य, व्यभिचार, जूआ, इत्यादि की गन्दगी में से निकलने की प्रेरणा की । स्वधर्म की कर्तव्यता को जीवन में दृढ कराया नीयम के पीछे चलने वाला स्वधर्मपालन का ऐसा मार्ग बनाया जो किसी को ठोकर न लगें और आंखमूंद कर सडसडाहट के साथ अध्यात्म का शिखर डांक सके ।

शिक्षापत्री में केवल गीता का ही दोहन नहीं अपितु सभी शास्त्र, श्रुति, स्मृति, तथा पुराण का भी किया गया है । व्यवहार तथा संसार का संशोधन करने वाली विद्वत भाषा में रची गयी नित्य नियमावली अर्थात शिक्षापत्री मनुष्य को दैनिक क्रम से युक्त करा देती है ।

सम्प्रदाय के आचार्य, प्रजा का पालन करने वाला राजा, संन्यास के मार्ग पर चलने वाला साधु या ब्रह्मचारी, गृहस्थ स्त्री, सधवा, विधवा, इन सभी के जीवन में आनेवाले अलग-अलग के लिए शिक्षापत्री आचार की दीवार खडी कर देती है । यह एक अमोघ आचार संहिता है ।

''आचारः परमो धर्मः आचारः परमंतपः ।
आचारः परमं ज्ञानं आचारात् किं न साध्यते ।।

आचार शुद्धि जीवन का प्रथम सोपान है । भगवान का प्रति बिंम्ब हृदय में उतारने के लिए शुद्ध अन्तः करण की आवश्यकता होती है । भगवान स्वामिनारायण ने इसी पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया है । आत्मा शुद्ध होगी तो परब्रह्म परमात्मा अपने आप प्रगट हो जायेगें । धर्म यह आचरण का विषय है । कहने के लिये नही । धर्म अर्थात, जीवन साधना, अर्थात जीवन का विकास । यथार्थतः व्यक्ति के भीतर रहनेवाला जो सदगुण उसको विकसित करने की एक प्रक्रिया है, और अधर्म व्यक्ति के भीतर दुर्गुण का विकास करने की एक प्रक्रिया, अध्यात्म यह अनुभव का विषय है, वर्णन का नही ।

भगवान स्वामिनारायण ने शिक्षापत्री में जीव, इश्वर, माया की अलग अलग परिभाषा किये है । धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति का स्वरुप भी स्पष्ट किये है । मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है उसे स्पष्ट करते हुए कहते है

निजात्मानां ब्रम्हरुपं देहत्रय
विलक्षणम् ।
विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः
कृष्णस्य सर्वदा ।।

ब्रह्मस्म होकर भगवान की भक्ति करना चाहिए । धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, इन पुरुषार्थो की कुंजी महाराजने शिक्षापत्री के स्म में मानव के हाथ में रख दिया है ।

— जीवन सग्राम में मनुष्य मात्र को यथार्य ज्ञान देने वाली अभिनव गीता अर्थात शिक्षापत्री ।
— जगत को सुधारने की अपेक्षा को सुधारना अमोघसिद्धान्तो की सुरम्यवाणी अर्थात शिक्षापत्री ।
— शिक्षापत्री अर्थात सभी शास्त्रो का सार, अपने अनुयायियो के लिए ''शिक्षण पत्रिका'' ।
— सत्संगी एवं सन्तो के लिए आचार संहिता एवं तैयार किया गया आज्ञा पत्र ।
— शिक्षापत्री को पृथ्वी पर ''धर्मनीती नियमावली'' तथा आचार संहिन्ता कहा जा सकता है ।
— शिक्षापत्री व्यावहारिक धर्म नियमों की पाठावली है ।
— शिक्षापत्री उज्ज्वल जीवन की अमोघ कुंजी है ।
— शिक्षापत्री एक अमोघ शस्त्र है, अमोघ शास्त्र है, आत्मा को ऊर्ध्वगति देने की ''मोक्षसरणी'' है ।
— आज्ञा पत्रिका स्मी शिक्षापत्री सनातन धर्म की तरह सनातन एवं शास्वत है ।
— ''पत्र विश्वं भवत्येक नीडम'' जहां सम्पूर्ण विश्व एक नीड बन जाता है यह ऐसी विश्वबन्धुत्व स्म अमरज्योति को प्रगट करनेवाली, आदेश को देने वाली श्री जी महाराज की अमरवाणी है ।
— शिक्षापत्री ''श्रेय'' तथा ''प्रेय'' का अविरत बहती हुई झरना है ।
— भगवान स्वामिनारायण ने इस ''शिक्षापत्री'' स्मी अनमोल जीवन गंगा को यहां बहाया है । तथा भारतीय तत्व चिंतन की एक महत्व की कमी को दूर करने का साधन है ।
— शुद्ध संस्कृत भाषा द्वारा तथा सरल गुजराती भाषांतर द्वारा आविष्कृत शिक्षापत्री गुर्जर भूमि को गौरव युक्त तथा अति महत्व प्रदान किया है ।
— महाकवि नन्हानालाल ने काव्यकला की दीपमाला प्रगट करके शिक्षापत्री का समश्लोकी गुजराती भाषांतर करके कितने ही नये दीप जलाये हैं ।

वानगी स्म में -

विना साक्षी सिद्धलेख पुत्र
मित्रादि शुंय ते ।
भूमि या धन का खरीद वेच
करना नही कभी ॥
(श्लो. - १४३)

हरिनाम दर्शनं पुण्यम्

गोरधन भाइ शंकर दास (सोजा)

स्वामिनारायणो नीलकंठो नारायणो हरिः ।
हरि कृष्णः सहजानन्दः कृष्णोऽस्तु में हृदि ॥

भगवान के भक्त को समझ बूझ करके पतिव्रता की तरह दृढ भक्ति करनी चाहिए । (व.ग.अ.१६) मुख मिश्री खाने के लिए है कोयला नहीं । जीभ ईश्वर का गुणगान करने के लिए है, राजा महाराजाओं का नहीं । स.गु. ब्रह्मानंद स्वा. के शब्दो में ''मोसो क्या सीकरी से काम'' । सूरदास ने भी लिखा ''हरिनाम दर्शनं पुण्यम'' भगवान के गुणगान करने के साथ ''परोपकाराय सतां विभूतयः इत्यादि वचन से भी शुद्ध सत्संग श्री हरि का ही है । अहं छोडकर परमात्मा की भजन करना स्वामी सेवक भाव ही सत्संग है । इसी सत्संग को बचाये रखने के लिये श्री हरि स्वयं गढडा, वडताल. अहमदावाद. जेतलपुर, जूनागढ, इत्यादि नव स्थलो पर महा मंदिरों अर्थात आत्मा का विकास करने के लिए परमात्मा की आज्ञा में सेवा का धाम बनाया है । अर्थात सर्वोपरि परब्रह्म परमात्मा का अक्षरधाम कहा गया है ।

जहां भक्तिमाता, धर्मपिता, हरिकृष्ण महाराज, राधाकृष्ण, श्री

लक्ष्मीनारायणदेव इत्यादि देवता की मूर्ति प्रतिष्ठित किये थे। तथा आत्मीय आश्रित लोगों के लिए शुद्ध भागवत धर्म सदाचार स्त्री शिक्षापत्री वचनामृत, सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण, जैसे नाना शास्त्र निर्मित हुए। अपने धर्मकुल सें ही आचार्य की स्थापना की। मुक्तानंद स्वामी, ब्रह्मानंद स्वामी, गुणातीतानंद स्वामी, नित्यानंद स्वामी, गोपालानंद स्वामी, निष्कुलानंद स्वामी, प्रेमानंद स्वामी, देवानंद स्वामी आदि सद्गुरुओं द्वारा प्रवर्तित है। जिसमें एक ही परमात्मा श्री हरि के ध्यान उपासना करने का संदेश है। पर्वतभाई, सुन्दरभाई, मयारामभाई, इत्यादि सदगृहस्थों तथा जीवुबा, पांचुबा, लाडुबा, राजबाइ, जैसीं सांख्ययोगी बहनो के लिए श्रीहरि नें अपनी ही मूर्ति को प्रतिष्ठित किया। तथा " हरिनाम दर्शन पुण्यम "को चरितार्थ किया। वही शुद्ध धर्मकुल आश्रित लोगों के लिए उद्धव सम्प्रदाय है। जहां मंदिरो में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री आयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरप्रसादजी के धर्मकुल के आश्रित आचार्य तथा संत श्रीहरि का सत्संग कराते है।

सुगन्ध पुष्पहारा द्यैर्विविधैस्महारकैः।
संपूजिताय भक्तोघैः सितांबरधराय च॥

श्री घनश्याम महाराज के दर्शन के साथ श्री नरनारायणदेव तथा श्री हरि के अन्य स्वरूपो का दर्शन होता है। तथा मुमुक्षु जीवों के सभी संशय, माया का बंधन सुःख दुःख, हर्ष-सोक, भूख-प्यास, आशा-निराशा, प्राप्ति-अप्राप्ति, जैसी उर्मि विराम प्राप्त करती है। बालक जैसा निर्दोष भाव से दर्शनार्थी कुलीन हो, नोकर या स्वामी हो, इन सभी राग द्वेषको छोडकर ब्रह्मरूप स्थिति को प्राप्त कर लेता है। परमात्मा स्वयंभू, स्वतंत्र, व्याप्त, अजय, युवा, वीर, तथा निर्भय को प्राप्त करता है।

श्रीहरिका दर्शन होते ही मृत्यु का भय दूर हो जाता है। और गीता के अनुसार स्थित प्रज्ञ बन जाता है। अर्थात " आत्मान्येवात्मना तुष्टः" होकर मनके सभी संकल्प विकल्प समाप्त हो जाते है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य इत्यादि से मुक्त होकर सचिदानंद स्वरूप के दर्शन का सुख प्राप्त करते ही अहं हट जाता है ओर आबाल वृद्धनर नारी सभी "जय श्री स्वामिनारायण" के मंत्रोच्चारण के साथ एक दूसरे के चरण में झुक जाते है। तब दास सेवक भाव की झलक स्पष्ट हो जाती है। उसमें से गुरुभक्ति प्रगट होते ही "आचार्य देवोभव" का नाद गूंज उठता है और कातर भावना का उदय होता है। केवल पूर्ण एक मात्र परमात्मा ही है अपूर्ण जीव को पूर्णता प्राप्त कराने वाले एक मात्र श्री हरिकृष्ण महाराज ही है। इस प्रकार की अनुभूति उपनिषद् में स्पष्ट की गई है।

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

इस के साथ ही -

साधूनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साधवः।
कालेन फलते तीर्थः सद्यः साधु समागमः॥

इस प्रकार का ज्ञान श्री हरि के संतो का सत्संग करने से मिलता है। भक्त के हृदय में से ऐसा नाद उठता है कि "मेरे तो एक सहजानंद स्वामी दूसरा न कोई" उसके साथ "मारु मनगमतुं करी भाव सुखडुं दीधु रे, मारुनमदिरीयुं महाराज वैकुंठ कीधुं रें "।

श्रीजी महाराज कहते है कि - परमेश्वर का दर्शन करते करते ईधर-उधर दृष्टि नही करनी चाहीए। परमेश्वर का दर्शन अपलक दृष्टि से करे पश्चात उसी रूप को हृदय में उतार कर ध्यान करते रहे। (वच-सारंगपुर)। श्री हरि का दर्शन इस प्रकार किया जाय तो मन मंदिर बन जायेगा। सत्संग का जब रंग लगे तब विचार करना चाहिए कि मैं कहां हूं? श्रीहरि की आज्ञा में या दुराचारी अधर्म की दुनिया में। मैं अर्जुन की तरह अपने धर्म में हूं कि परधर्म मैं हूं। मैं इस दुनिया में किस कारण से आया हूं? सुकृत कर्मो के फल को प्राप्त करने या परमात्मा श्री हरि के अक्षरधाम को (मुक्ति) प्राप्त करने के लिये! क्या बन्धन से छूटने

का कोइ मार्ग है ? तो इन सभी का एक ही उत्तर श्रीजी महाराज के शब्दों का दोष नहीं रहता है । वह ब्रह्मस्म होजाता है । (व.सा.९) । मन मंदिर बने तो ही धर्मकुल का आश्रित बन सकता है । लेकिन शिष्य बनना सरल नही है । कर्ण ओर अर्जुन जैसी गुरु भक्ति की जरुरत है तभी मन को वश में करके उसकी गति को रोकने के लिए पांचो इन्द्रियों के सुख को छोडना पडेगा । श्रीजी महाराज कहते है कि मैं धक्का मुक्की वाले भीड में प्राप्त नही होता बल्कि प्रसाद तथा दर्शन में श्रद्धा हो तथा मेरी आज्ञा में श्रद्धा हो तो मैं वही विराजमान होकर उसके सभी संकल्प पूरा करते है ।

कारियाणी में प्रभु विराजमान है, वर्षाकाल है, मूसलाधार बरसात हो रही है । गांव की गलियो में पानी बह रहा है । भक्त के मकान का बंडेर दीवाल से झुंककर नीचे झूल रहा है और भक्त परेशान होकर पुकार उठता है स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण यह सुनकर अन्तर्यामी प्रभु भक्त के घर पहुंच जाते है, और कहते है कि मेरे कन्धे पर पैर रखो यह मेरी आज्ञा है। तब भक्त कहता है -

शरीराणि अनित्यानि बैभवो नैव शास्वतः ।
नित्यं सन्निहितो मृत्युः कर्तव्यो धर्म संग्रहः ॥

मनुष्य शरीर नाशवंत है, वैभव नाशवंत है, मृत्यु निश्चित है । इस लिये शरीर से धर्म का पालन करना चाहिए । 'परोपकाराय सतां विभूतयः' इस उक्ति को चरितार्थ करना चाहिए । दुःख में मदद करना सच्चा परोपकार है । संकट में जो काम आवे वही सच्चा दानी दयालु है । मेरा मित्र है । वह मेरे संदेश को स्वीकार करके, मेरे स्वस्म को समझ करके, प्रभु की आज्ञा मानकर शरणागति होकर दीवाल पर बंडेर को रखकर भगवान के चरण में गिर जाता है । कवि ने सुन्दर कहा हैं-

जीवन ज्योति जगावों प्रभु हे,
जीवन ज्योति जगावो ।
उगता अम मनना फुलडा को इस
से सभर बनावो ।
जीवन का रंग प्रगटाने पींछी
अपनी आप चलावो,
हमको मध्यमघता शिखवाडो प्रभ
हे, जीवन ज्योति जगावो ॥

सत्संग की ज्योति श्री हरि ने जलायी है । उसी में श्री हरि की मूर्ति विराजमान है । दादाखाचर जैसे तन्मय भक्त "भूरि स्नेहो च माधवे" उक्ति को चरितार्थ किया । श्री हरि की मूर्तियो का तथा जिस मूर्ति को धर्मकुल के आचार्य ने प्रतिष्ठित किया हो उसी मूर्ति की सेवा पूजा शिक्षापत्री वचन से प्रमाणित है । श्री हरि की आज्ञा में, रहकर सन्त, पार्षद, आचार्य, हरिभक्त सभी की निंदा एवं प्रशंसा से दूर रहकर श्री हरि के भजन-भक्ति का एक मात्र लक्ष्य होना चाहिए । श्री हरि के अनुकूल मन मंदिर बनाने के लिए काम, क्रोध, लोभ, मद, मात्सर्य, ईर्ष्या इत्यादि अन्तःकरण के शत्रुओ से दूर होकर गीता में कहे हुए के अनुसार जीवन व्यतीत करना श्रेष्ठ है -

निर्माण मोहाजित संग दोषा
आध्यात्म वृत्या विनिवृत्त कामा ।
द्वन्द्वै र्विमुक्ता सुख दुःख संज्ञै
र्गच्छयन्त्य मूढा पदमव्ययंतत् ॥

इस प्रकार श्री हरि के बताये नियमो में कहना एवं नरनारायण देव की सेवा में लगे आचार्य श्री, संत, सत्पुरुष, हरिभक्त इत्यादि में से किसी का द्रोह न हो इस लिये मन मंदिर में सत्संग की ज्योति जले एतदर्थ नितप्रतिदिन संत समागम करना चाहिए ।

अमदावाद मंदिर में ठाकुरजी को चांदी के थाल की सेवा

दहींसरा (कच्छ) अ.नि.प.भ. मंजुलाबहन दिनेशभाई लींबाणी, परबत कुरजी हीलारीया, घ.प. अमरबहन परबत हालारीया, अनिल, दिनेश लींबाणी की तरफ से श्री नरनारायण देव के शाम के चांदी के थाल बनाने के लिये स्मये १,३०,०००/- की सेवा की है । श्रीहरि की कृपा तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज उन पर प्रशन्न हुये है।

अपना बाप कौन ?

- अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला (न्यूयोक)

नये वर्ष का दिन था । छोटा बालक सुन्दर कपडा पहनकर तैयार हुआ । पिताजी अंगुली पकडकर पहले मंदिर दर्शन करने ले गये । पश्चात् सभी बडो के घर ले गये । पहले तो बडे पिता के घर गया वहां पिताने कहा बेटा ये तुम्हारे बडे पिता हैं इनका पैर छुओ । बालक ने पैर छुआ और बडे पिताने उसे प्रथम बोहनी करा दी, इस प्रकार काका, मामा, मौसा, फुआ इत्यादि के पैर छुए और सभी ने उसे रुपये दिये उससे उसका जेब भर गया लेकिन रुपया से उसे सन्तोष नहीं हुआ ।

घर आने पर माता की गोद में बैठकर बालक रोने लगा । माताने पूछा कि बेटा क्यो रो रहे हो ? क्या हो गया ?

बालक ने कहा मां मैं मामा, बडे पिता, काका सभी के घर गया लेकिन इनमें मेरे बाप कौन ?

मां ने समझाया बेटा ? तुम्हारी अंगुली पकडकर जो सभी के घर ले गये और ले आये वहीं तुम्हारे बाप हैं।

इसी प्रकार की ठीक स्थिति का अनुभव हम भी कर रहे हैं । अपना बाप कौन ? अपना पिता कौन ? पहचानना होगा । जो अपनी अंगुली पकडे, जिन्होने मोक्ष का मार्ग बताया, अन्तकाल में जो लेने का वचन दिया वहीं हमारे बाप है । श्री हरि ही हमारे पिता है ।

सत्संग को स्वीकार किया है । श्री सहजानन्द स्वामी की शिक्षापत्री का नित्य पाठ करते है । वचनामृत का भी पाठ करते है । इसलिये श्रीस्वामिनारायण भगवान ही अपने पिता है । ऐसी दृढता नित्य रखनी है। इसमें रत्तीभर का परिवर्तन चलेगा नही । सत्यस्म में मन का अर्पण करना होगा । किसी प्रकार कसर नही करनी है अन्यथा पिता श्री हरि से दूर होना पडेगा । नहीं तो श्री हरि जैसे कहते है कि हमसे आपसे कोई लेना देना नहीं है ।

कोई अपना मित्र हो और यह जानकारी हो कि इसने मेरे भाई को मार डाला है तो क्या उसके साथ मित्रता रहेगी ? बल्कि उसे मारने दौडेगे । कवि ने सही कहा है ।

कडवा होय लीमडा तो य एनी
शीतळ छाया
बांधव होय अबोलडा तोय पोतानी
बांय ।

श्री हरि को पिता माने है । तो उन्हे तथा उनके सत्संग को खराब बोलनेवाले के साथ सम्बन्ध कैसे रखा जा सकता है ?

पुत्र यह जानता है कि यही हमारे पिता है । मेरी बात अवश्य मानेंगे । पिता के ऊपर विवेकी पुत्र की पूरी श्रद्धा विश्वास, तथा असीम प्रेम होता है । पिताभी पुत्र पर खूब प्रेम बरसाता है तथा सम्पूर्ण इच्छाओ को पूर्ण करता है ।

यहां असीम विश्वास का एक नाता होता है । पिताकी आज्ञा का उल्लंघन पुत्र कभी नहीं करता है । कुछ उम्र तक वह खूब निश्चित होता है । लेकिन उम्र बढने के साथ ही पढना तथा व्यावहारिक कार्य में स्वयं लग जाता है । पिता के ऊपर से अवलंब घटने लगता है । लेकिन यही हमारे बाप है ऐसी भावना में जीवन पर्यन्त कोई कमी नही आती है । पिता के ऊपर अपनापन स्थायी बना ही रहता है । तथा प्रेमालु पिता भी अपने पुत्र से स्नेह कम नही करता है ।अनंत कोटि ब्रह्मांड जिसके रोम रोंम मे विद्यमान है वे ही हमारे पिता है । बडवानल की अग्नि दीपक के रुप में आकर घर को प्रकाशित कर रही है । यह हाथी हमारे भाग्य में बंध गया है यही हमारा पिता है ऐसी दृढता होनी चाहिये ।

श्री सहजानन्द स्वामी ही अपने भगवान है इष्टदेव है । अपने पिता है । इसके बाद हम सच्चे आज्ञाकारी तथा विवेकी की तरह सत्संगी होकर उनकी आज्ञा में रहेगे । भाई, पत्नी, गृहस्थ, त्यागी, सभी को किस प्रकार कहना चाहिए पिता श्री हरि सबकुछ सुगम कर दिये है । कहीं पूछने की जरुरत ही नहीं केवल सच्ची सन्तान, सच्चा सत्संगी बनने की जरुरत है ।

सर्वावतारी, सर्वोपरि, अपने इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की जीवन लीला का जो सत्शास्त्र है उस में जो कथाये है उसमें से वचनामृत शिक्षापत्री अमूल्य ग्रन्थ है । उसका मनगढन्त अर्थ करने से अपने पिता बदल नहीं जाते है ।

श्री हरि ऐसा कहते है कि "आपलोग आचार्य को मानना" बाद में तो किसी तर्क या बुद्धि या दलील

की जरुरत ही नही होती है । सम्प्रदाय की गद्दी पर बैठे हुए आचार्य की आज्ञा तथा उनकी प्रसन्नता प्राप्त करना सत्संगी का कर्तव्य है ।

जय जयकार तो मात्र भगवान की होनी चाहिए अन्य किसी की नही । जगत व्यवहार में नेताओ की जयजयकार तो प्रतिदिन हो रही है यह अलग बात है । जगत व्यवहार तथा भगत व्यवहार दोनो अलग विधा है । "जगत मे जीव" तथा "भगवान के भक्त " की बात तो भगवान ने जगह जगह पर बतायी है ।

श्री हरि के साथ पांच सौ परमहंस थे । सभी एक से एक बढकर समर्थ थे । फिर भी श्रीजी के सामने दास भाव से रहते थे । कभी मुक्तानन्द स्वामी की जय, ब्रह्मानंन्द स्वामी की जय, गोपालानन्द स्वामी की जय ऐसा कही कभी सुना है ।

श्री हरि के अपर स्वरुप ऐंसे श्री आचार्य महाराज की विरुद शोभायमान होती है । श्रीजी महाराज तथा प.पू.आचार्य महाराज श्री यह दोनो शब्द श्री हरिने अपने मुख से दिया है । इसके अलावा चाहे जितना भी बडा सत्पुरुष हो लेकिन उस के साथ "महाराज" शब्द का अनुसन्धान ठीक नही ।

भगवान जैसा तो एक भगवान ही है । (ग.अ.३९) नारायण जैसा तो एक नारायण ही है । यही हमारे बाप यही हमारे पिता यही हमारे इष्टदेव यही पूर्ण पुरुषोत्तम पर ब्रह्मपरमात्मा सहजानन्द स्वामी है दूसरा कोई नही ।

परिवार में "यह हमारे बाप" यह ज्ञान होने के बाद जगत में किसी को पिता मानते है क्या ?

तो श्री हरि ही अपने बाप है वही अपने पिता है । श्रीहरि द्वारा मूलभूत प्रणाली वाला सत्संग ही अपने पिता की खेती है । उसमें विचरण करें घूमे आठो प्रहर उसी में आनन्दित रहे यही उत्तम है ।

हरहा पशु की तरह इधर उधर भटक ने से क्या फायदा केवल मूर्खता ही कहलायेगी ।

सत्संगी हरिभक्तोके लिये सेवा का अमूल्य मौका

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण सदा स्वहस्त से सर्व प्रथम संस्थापित भगवानश्री नरनारायणदेव के अतिदिव्य व भव्याति भव्य इस पीठस्थान महा मंदिरमें अनेकविध कार्य अविरत चल रहे है । जिसमें श्रीजी महाराजकी आज्ञानुसार सब अपने मोक्षदाता भगवान श्रीहरिको प्रसन्न करने के लिये तन-मन-धन से सेवा करते है । इस उज्जवल परम्परा के आश्रित हरिभक्तोको श्रीनरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजीकी आज्ञासे अवगत कराते हुये अत्यंत आनंद हो रहा है कि भगवानश्री नरनारायणदेव को भोग के लिये रसोई घर जहाँ शुद्ध पवित्रतापूर्वक श्रीहरिको अर्पण करने के लिये विविध प्रकार के मिष्ठान्न, पक्वान्न, छप्पनभोग आदि बनाने का कार्य सम्पन्न होता है । उस रसोई घर के मकानका व सदा श्रीहरिकी सेवा करते वर्णिराज ब्रह्मचारियो के आवासस्थान व उत्सव, नूतन वर्ष के अन्नकूट के उत्सव के छप्पनभोगका निर्माण जहाँ होता है वह मकान व इन सब मकानो से घिरा हुआ व अपने इष्टदेव ध्येय मूर्ति के रुप में जहाँ विराजमान है ऐसा रंगमहोल है । उसके चारोओरके जीर्णशीर्ण हो गये मकानोका जीर्णोद्धार अर्थात् पुनः निर्माणकी अत्यंत आवश्यकता जानकर वह पुनीत कार्य अपने सबके प्राणप्रिय भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री लालजी महाराजश्री कौशलेन्द्रप्रसादजीकी देखरेखमें उनके मार्गदर्शनमें व उनकी इच्छानुसार क रने का सोचा है । इस अतिमहत्वके कार्यमें श्रीजी महाराजको प्रसन्न करने व अपना मोक्षरुप महान कार्य करने तन-मन-धनसे सेवा करनेका आह्वान समग्र सत्संग समाजको किया जाता है । जिसमें पुनः निर्माण के बांधकार्य मे भूमिदान स्वमें, वस्तु रुपमें सेवा की ईच्छा हो वे श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के नाम का चेक/ड्राफ्ट/रकम भेंजकर सहभागी बने ।

हनुमानजी को हराया

- चंद्रकान्त मोहनलाल पाठक (गांधीनगर)

नारदजीकी सूचना अनुसार पांडवो ने अपने गृहस्थ जीवन की व्यवस्था बनाई थी । पांचो भाइयो ने सर्व सहमति से एक ठराव किया था । प्रत्येक भाई द्रोपदी के साथ एक-एक वर्ष रहेंगे । जो भाई द्रोपदी के साथ हो उसके दांपत्य जीवन में पडना नही । और जब वे दोनो एकांत में बैठे हो तो दूसरे को वहां जाना नही । यदि शर्त का भंग हो जाय तो बारह वर्ष तक ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर वन में रहना ।

पांडव सुखी थे । प्रजा सुखी थी। धर्मराज का राजध्वज धर्मध्वज की तरह लहरा रहा था । इन्द्रप्रस्थ अपनी राज्य की क्षितिज बढा रहा था । तभी एक प्रसंग हुआ । एक ब्राह्मण की गाय कुछ चोर उठा ले गये । ब्राह्मण ने पांडवो से अपने गायो के लिये कहा । यह सुन अर्जुन खडा हुआ । जरा रुका । उसे वह प्रस्ताव याद आया लेकिन तुरंत निर्णय लिआ । कुछ भी हो लेकिन राजधर्म प्रथम । धर्मराज युधिष्ठिर तथा पांचाली गृह मंदिर में गोष्ठी कर रहे थे । तेजी से जा कर अर्जुन ने कहा बडे भाई क्षमा करना यह कह अपना गांडीव चढा कर बाहर नीकल गये । चोरो का पीछा कर गाय प्राप्त कर । ब्रह्मदेव को सौंप दी ।

किन्तु प्रस्ताव भंग होने से बारह वर्ष का वनवास हुआ । महाराजा युधिष्ठिर के पैर छुए, आज्ञा मांगी । गौरक्षा क्षत्रियो का प्रथम धर्म है । इसलिये आपको माफ करते है । लेकिन अर्जुन माने नही । वे नीकल पडे । हरिद्वार, बद्री-केदार, नैमिषारण्य, अंगदेश, बंगाल, महेन्द्रगिरि, मणिपुर, शिवकांची, विष्णुकांची आदि तीर्थो से होते हुए काम्थक वन में आये । वहां से सेतुबंध रामेश्वर आये और दर्शन किए।

रामेश्वर महादेव की प्रतिष्ठाकी एक सुन्दर कथा है । इस महादेव के स्थापनार्थ आचार्यपद के लिए रावण को आमंत्रित किआ था । रावण महादेव का परंभक्त था । रावण शुद्ध ब्राह्मण था । उसने आचार्य पद खुशी पूर्वक स्वीकार किया । तथा प्रतिष्ठा के लिए शिवलिंग कैसा, कहां से लाना वह भी बताया तथा प्रतिष्ठा के लिए मुहूर्त भी रावणने नीकाला था । उसके कहने के अनुसार राम ने हनुमान को शिवलिंग लाने के लिए भेजा ।

रावण प्रतिष्ठा के लिए ब्राह्मण स्वस्थ में आया था । प्रतिमा का वर्णन सुंदर प्रकार से किया था । वह जानता था की प्रतिष्ठा में यजमान राम के साथ सीता को बैठना पडेगा। इसलिए सीताजीको साथ लाया । सीताजी को शंका-कुशंका न हो इस लिए विभीषण की पत्नी को साथ लाया था । मुहूर्त का समय हुआ लेकिन हनुमानजी शिवलिंग नही लेकर आये । रावणने राम से कहा कि मुहूर्त का समय नहीं जाने दें सीताजी से कहिये की रेत का शिवलिंग बनायें । रेत कहाँ सै लायें ये मै बताता हूं ।

आचार्य के कथनानुसार राम नें शिवलिंग की प्रतिष्ठा की । विधि पूर्ण होते ही रावण, विभीषण की पत्नी, सीताजी तीनो लंका चले गये । फिर हनुमानजी शिवलिंग लेकर आये। आवश्यकता के अनुसार शिवलिंग खोजने में विलंब हुआ यह बता कर अफसोस किये । हनुमानजी को बहुत बुरा लगा कि दुश्मन रावण के शब्दो में विश्वास रख इंतजार के बगैर रेत के शिवलिंग की स्थापना की । परंतु रामजी के बात पर विश्वास एवम् दास भक्ति के आधिन हो कर इष्टदेव की इस बात को मान लिया ।

प्रभो । अब इस शिवलिंग का क्या करेगें ? ऐसा हनुमानजी ने पूछा तब राम बोले इस शिवलिंग को आप अपने हाथो से प्रतिष्ठित करो । इस दौरान मै आचार्य बनूंगा । रामजी की आज्ञा से हनुमानजी ने शिवलिंग की स्थापना की । रामजी द्वारा स्थापित रामेश्वर एवम् हनुमानजी द्वारा स्थापित हनुमतेश्वर अभी भी एक-दूसरे के संनिकट है ।

रामेश्वर मंदिर में अर्जुन को हनुमानजी मिले । दोनो ने एक दूसरे को नमस्कार किया । पवनपुत्र ने कहा मैं यहीं रहता हूँ । मैं इष्टदेव भगवान श्री रामचंद्र के दर्शन करता हूं तथा उनकी सेवा करता हूं । उनकी लीला चरित्र गाता हूं । यहां बहुत

सत्पुरुष, ऋषि -मुनि तथा देवगण आते हैं । उनके भी दर्शन होते हैं । अलौकिक सुख मिलता है । आज• आपके दर्शन से धन्यता का अनुभव कर रहा हूँ ।

अर्जुन ने कहा आप रामजी के अनन्य सेवक हैं । उन्ही के पास रहने वाले हो तो आप रामकथा कहे । अंजनीपुत्र महिमापूर्वक दशरथनंदन रामचंद्रजी की कथा सुनाते है । लंका में प्रवेशार्थ पुल बांधनेका प्रसंग आया नल-नील नाम के दो वानर पुल को बांधने का कार्य कर रहे थे। अनेक सहायक शक्तिअनुसार पत्थर लाते और नल-नील उसपर राम लिख कर समुद्र पर लगाते इस प्रकार सेतु बनता जा रहा था । चारसो गाँव जितना लंबा पुल बनाया ।

सेतु की बात सुनकर अर्जुन इस प्रकार जोरो से हंसने लगे और बोले रघुकुल नायक तो पूर्ण समर्थ थे तथा वे अद्‌भुद धनुर्धर थे । उन्होंने बाणो से सेतु क्यों नहीं बनाया ।

बाण विनाश का हथियार है । सर्जन के काम नहीं आता बाण से बना हुआ पुल टूट जाता है । तब अर्जुन बोले मैं होता तो न टूटने वाला पुल बाण से बना देता ।

ऐसा है तो अभी बनाओ । अर्जुन ने बाणों से एक योजन लांबा सेतु बनाया । कपिराज, यह मजबूत सेतु है ! वज्र टूटेगा लेकीन पुल नहीं, यदि कोई तोड दे तो मैं आत्मघात करलूं । मैं प्रतिज्ञा लेता हूं ।

तब हनुमानजी बोले हे कुंती पुत्र । यह, सेतु मैं एक बार मे तोड दूंगा न तोड पाऊ तो मैं आपका दास बनजाऊँगा ।

फिर जय श्रीराम कह कर हनुमानजी पुल पर कूदे और पूल टूट गया ।

अर्जुन का मुख श्यामवर्ण का हो गया तथा वह आत्मदाह के लिए काष्ठ एकत्रित करने लगे ।

यह घटना कृष्णजी ने द्वारिका से देखी । और फिर उन्होने सोचा की यदि अर्जुन आत्मदाह कर ले तो विधि द्वारा विहित समग्र कार्य पूर्ण नहीं होंगे

अर्जुन को चिता तैयार करते देख एक ब्रह्मण ने आ कर पूछा कौन मर गया ? भाइ ।

फिर अर्जुन ने समग्र बात बताई तब हनुमानजी से उस ब्राह्मण ने पूछा इस प्रतिज्ञा का कोई गवाह है ?

तब दोनोने कहा "ना"

देखो भाई जिसका कोई गवाह न हो । बात सिद्ध नहीं होती । इसलिये फिर से सेतु बनाइये और आप दोनो का गवाह बनूंगा और फिर प्रतिज्ञाका पालन करें ।

फिर से अर्जुन ने सेतु बनाया तब ब्राह्मण स्वस्मी कृष्णाजी ने पुल के नीचे सुदर्शन चक्र रखा । हनुमानजी कूदे लेकिन पुल टूटा नहीं ।

ब्राह्मण ने कहा आप हारे आप इनकी ध्वजा पर बैठें और आफत में रक्षा करें तब से हनुमान कपिध्वज बने ।

फिर अर्जुन प्रभास क्षेत्र गये । श्री कृष्ण को पता चलते ही वे अर्जुन को लेकर गिरनार का दर्शन कर द्वारका ले आये ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में हुवे आरोग्यलक्षी केम्प

प.पू.ध.धु. आचार्य प. पू. लालजी महाराज की आर्शीवादात्मक आज्ञा से प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री के षष्टी पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में दि. १४-११-०३ को वहेलाल मंदिर, दि. २१-१२-०३ को हाथीजण श्री स्वामिनारायण संस्कारधाम तथा २८-१२-०३ को निकोल श्री स्वामिनारायण मंदिर में हृदय रोग डायाबीटीस इत्यादि रोगो के निदान केम्प तथा ब्लड डोनेशन केम्प रखा गया था । जिसमें ५१० मरीजो ने लाभ लिया था ।

२२४ हरिभक्तो ने अपना रक्तदान किया था । उसमें कुछ लोगो को डायाबीटीस ब्लड प्रेशर चेक कर मुक्त में दवा दी गई थी । कार्डियोग्राम भी मुफ्त में नीकाला गया था । वहेलाल के सतीषभाई पदाणीने लग्न अवसर पर रक्तदान कर शादीको विशेष आनंद में परिवर्तन किया ।

प.भ. डॉ. रमेशभाई परीख, डॉ. भाविन परीख साथ में सवजीभाई पी. तळपदा, राजुभाई पदमाणी, जीतुभाई काकडीयाने सुंदर व्यवस्था की थी । वहेलाल के स्वामी चैतन्यमुनीदासजी की सेवा भी प्रशंसनीय थी ।

- डॉ. भावीन परीख

शक्ति सद्‌गुरु संतकी

- विनोद एस. चौधरी (नडियाद-खेडा)

प्यारे भक्तजनो ! इस सृष्टि में मेघ, वस्ग, अग्नि, पहाड, समुद्र इत्यादि अनगिनत शक्ति देखने को मिलती है। किन्तु जब जोरो से हवा चलती है तब हिमालय को भी झुकना पडता है। दसो दिशा से जलती अग्नि मेघ से मजबूर है। उसे उसके आगे झुकना पडता है। अर्थात् सृष्टि की समग्र शक्ति मर्यादित है। लेकिन संत शक्ति इन सभी शक्तियों से परे है।

देखिये, अगस्त्य नाम के ऋषि आचमन मात्र से ही समुद्र पान कर गये खुद वस्गदेव यह शक्ति देख आश्चर्यचकित हो गये। अरे ! काल, कर्म तथा माया जिस पर नही चलती ऐसी शक्ति मात्र संत के पास है। इसी लिए कहा गया है कि -

"हद मे चले सो ओलिया, बेहद चले सो पीर,
हद बेहद दोनु चले, उसका नाम फकीर।"

यह शक्ति खुद भगवान ने संत को दी है। इसलिए उनके सदगुणो का प्रताप है। संत केवल प्रभु की मर्जी में रहते है। जिस से भगवान उनके आधीन हो कर उनकी हर क्रिया में साथ देते है। ऐसे ही एक संत मुक्तानंद स्वामी थे।

एकबार भगवान स्वामिनारायण सत्संग विचरण करते हुए धमासण गाँव पधारे। और एक पटेल के यहाँ स्के। पटेलने खूब सेवा की। जब महाराज चलने लगे तब पटेल बोला महाराज मैने आपको उतार दिया, खिलाया और आप हमे कुछ नही देंगे ? पटेल स्वभाव से गुस्से वाले थे लेकिन उनके पूछने का भाव सुंदर था। महाराज ने पूछा आप को क्या चाहिये ? तब पटेल बोला मुझे साधु बनना है महाराज बोले "साधु बनने के लिए परिवारजनो की आज्ञा चाहिए। यदि वे विरोध करे तो ?" तब पटेल बोला "अरे महाराज ! मैं परिवारजनो को नीपट लूंगा। ये जिम्मेदारी मेरी है।" महाराज ने कहा साधु बनने के पश्चात क्या ? साधु बनगया तो क्या ? जो आयेगा उसे बता दूंगा। साधु बना यानी उनसे नहीं बोलने का ? पटेल को क्रोधावेश देख महाराजने संतो से पूछा क्या करना है तब संतो ने कहा कि साधु बनने के पश्चात यह कहे की पैर दबा या झगडा करे तो ! फिर क्या करना चाहिये ? कईबार तो साधु बनने के बाद कहे हम दोनो समान है लेकिन उसे यह नही पता चलता की भले हमारे वस्त्र समान है लेकन गुण मे जमीन आसमान का फर्क है। आकाश के सभी ग्रह समान नही होती। और चमकते हुए सभी तारो का प्रकाश समान नही होता है। किन्तु मोह से भरे हुए अज्ञानी मानव को कहाँ से पता चले ?

श्रीहरि बोले संतो ! बोलो इसका क्या करे ? ये क्रोधी और हठीले है। यदि हम ना बोल कर चले तो हमारा यह पीछा करेगा। संतो ने कहा महाराज इससे और पूछिये। तब श्रीजी महाराजने पूछा आप क्या मौन रख शकते हो तब पटेल बोले मैने क्या गुनाह किया है जो मै नही बोलूं ? महाराज ने कहा बोलना लेकिन धून-कीर्तन ही तब पटले बोला महाराज सभी साधु तो बात करते है आप मुझे ही क्यो ना कह रहे है। तब वे बोले वे तो सत्संग की बाते करते है। तो पटेल ने कहा मै भी सत्संग की बाते करुंगा। ठीक है तो हम आपको साधु बनायेंगे लेकिन इसका गुरु कौन बनेगा ? महाराज जब कोई मुमुक्षु को दीक्षा देते तब गुरु श्रेष्ठ संत को बनाते। जो परंपरा आज भी चली आ रही है। किन्तु इस क्रोधी संत का गुरु कौन बनेगा ? तब महाराज ने पूछा किन्तु कोई उत्तर नहीं आया। तब महाराजने मुक्तानंद स्वामी को कहा आप इनके गुरु बनो। महाराज की आज्ञा सुन "ठीक है महाराज मैं इसका गुरु बन निर्मानी कर दुंगा।" मुक्तानंद स्वामी के गुण अति उत्तम थे कि अपने इष्टदेव का विरोध नही करते थें। फिर महाराज ने पटेल को दीक्षा देकर श्री गुरुचरणानंद स्वामी नाम रखा और मुक्तानंद स्वामी को सोंपा। मुक्तानंद स्वामीने धीरे-धीरे ज्ञान देकर, वाणी वात्सल्यता से निर्मानी कर दिया। क्रोधी को सरल बनाना आसान नही है वह तो मुक्तानंद स्वामी ही कर पाते है। खुद स्वामीने कहा है -

"क्रोध न करवो रे, हरिजन उपर रे,
वचन सुणी, नव बांधवु वेर रे,
समजी विचारी रे, वचन मुखे बोलीये रे,
संत समागम रे, शुद्ध थई कीजीये।"

इस प्रकार सद्‌गुरु मुक्तानंद स्वामी की वाणी क्रोधी को निष्क्रोधी बना देती है, रोगी को निरोगी, कामी को निष्कामी तथा स्वादी को निष्वादी बना देती है। आज भी ऐसे संत इस सृष्टि पर मौजूद है। जिनकी वाणी सुनते ही लाखो के जीवन में परिवर्तन आता है।

मातृऋण

- स्वामी श्री रंगदासजी (महंत सिध्धपुर)

प्यारे हरिभक्तो ! मनुष्य के बहुत से ऋण है जिसे वह पूर्ण नही कर पाता । जैसे की मातृऋण, पितृऋण, गुरुऋण, देवऋण इत्यादि ।

माता ने हमको जन्म दिया है । अनेक कष्टो को सहन कर हमे बडा किया है । माता का यह उपकार हम भूल जाये इतना सामर्थ्य नही है । प्रत्येक मनुष्य माता का ऋणी है । "माता का ऋण मनुष्य १००वे जन्म तक भी नही पूर्ण कर शकता" ऐसा भगवान कृष्ण ने माता देवकी को कारावास में कहा था । घनश्याम महाराजने भक्ति माता की सेवा कर अद्‌भुद उदाहरण प्रस्तुत किया है ।

हमारे पितृ अभी जीवंत नही है, उनके जीव का उद्धार करना हमारा धर्म है।

गुजरात में माता का श्राद्ध सिद्धपुर में होता है। प्रथम १०वाँ, ११वाँ श्राद्ध किया जाता है । दो वर्ष पश्चात शास्त्रोक्तविधि पूर्वक श्राद्ध करने से आत्मा का उद्धार होता है । जीव को मोक्ष मिलता है ।

पिता ने देह का पालन-पोषण किया । हमे पढाया उनका भी हम पर बहुत ऋण है ।

गुरु ने ज्ञान दिया । सुंदर संस्कार दिये । उनका भी हम पर ऋण है ।

भगवान ने हमे मनुष्यावतार दिया। उन्ही ने प्रकाश, जल तथा भोजन दिया । उनके ऋण की मनुष्य के जीवन मे कमी नही है । इसीलिए श्रीहरि द्वारा निर्मित शिक्षापत्री में धर्मादा करने को कहा है जिससे कुछ ऋण कम हो ।

रक्षन्ति पुण्यानि पुरा कृतानि ।

प्राचीन समय मे सरस्वती नदी के तट पर कर्दम प्रजापति ने हजारो वर्ष तक तप किया । भगवान आये और कर्दम का तप देख उनकी आँखो में से आँसू गिरने लगे । उनके आँसू के बिंदु का सरोवर बना ।

भगवान ने कर्दम को तप मे से जगाया । कर्दम ने भगवान की स्तुति प्रार्थना की । फिर भगवानने कर्दम को कहा "कर्दम ! अब तपश्चर्या पूर्ण करो और गृहस्थाश्रम धारण करो । आज से तीसरे दिन मनुराजा तथा शतरूपा रानी अपनी कन्या देवहुती को लेकर आपके पास आयेंगे उसको आप स्वीकार करना ।

तीसरे दिन मनुराजा तथा रानी सतरूपा अपनी पुत्री देवहूतीको लेकर आश्रम आये । कर्दम ने उनका सत्कार किया । फिर कर्दम ने कहा मेरे पास यह झोपडी ही है । आपकी पुत्री से मुझे पुत्र प्राप्त होगा फिर मै वैराग्य धारण कर वन में जाउगा । देवहुती ने यह शर्त मानली । राजा रानी बहुत धन देकर नगर को लौट गए ।

कुछ समय बाद देवहुती को नव पुत्री हुई । सबसे बडी अनसूया माता थी । उसे अत्रिऋषि को सोंपा । उनसे दत्त, दुर्वासा, चंद्रमा हुए सभी कन्याए बडी होते ही ऋषियो को दे दी । ऋषियो ने उनके द्वारा प्रजा उत्पन्न कर समग्र जगत को भर दिया ।

कुछ समय के बाद कपील भगवान का जन्म हुआ । २४ अवतार में उनकाभी नाम है। यह अवतार गुजरात में हुआ था । कर्दम ने खुद कर्मादि संस्कार किए । तत्पश्चात वे वन चले गये ।

कपिल भगवान ने माता की सेवा की । तथा सांख्य शास्त्रका उपदेश दिया । सद्‌गति के बाद श्राद्ध किया। देवहुती सिद्ध गतिको प्राप्त हुई । इसीलिए तीर्थ का नाम सिद्धपदम् हुवा । फिर इसकानाम समय के बहाव से सिद्धपुर हुआ ।

यह तीर्थ प्राचीन है । माता के मृत्यु के दो वर्ष पश्चात माता का श्राद्ध सरस्वती नदी के तट पर करने की सुंदर महिमा है । माता को मोक्ष देना प्रत्येक पुत्र का धर्म है । पु नामके नर्क से पितृ का उद्धार करे उसे पुत्र कहते है ।

यहाँ सिद्धपुर मे रणछोडभाई नामके निष्ठावान हरिभक्त ने अपना बडा सा मकान आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी को मंदिर बनाने के लिए अर्पण किया । जिसमे संवत १९२१ ज्येष्ठ कृष्ण ११ के शुभ दिन को आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी ने श्री धर्मभक्ति हरिकृष्ण महाराज की प्रतिष्ठा की ।

जो व्यक्ति माता का श्राद्ध नही करते वे आधिव्याधि से तडपते है । परिवार मे झगडे होते है । असाध्य रोग होते है । प्रत्येक मनुष्य को माता का श्राद्ध शक्ति अनुसार करना चाहिए । इतिहास गवाह है कि नरसिंह महेता के पिताका श्राद्ध श्रीकृष्ण भगवान ने किया था ।

वि.स. १८६५ में सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान सिद्धपुर आये थे । सरस्वती नदी में ५०० परमहंस सहित स्नान किये थे ।

ब्राह्मणो को दान दिया था । सत्संगियो से छोटे-बडे बर्तन दिलवाये थे । और सिध्धपुर की महिमा बतायी था । तीर्थ में मुंडन कराना चाहिए । ब्रह्मभोजन कराना चाहिए इत्यादि नियमो का पालन करना चाहिए । श्रद्धा के बगैर किसी भी तीर्थ में फल मिलता नही है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

जीवन का हिसाब किताब कब करे

- शास्त्री ह. जी. स्वामी (गांधीनगर)

सौ मंजिल का मकान उसकी क्या शोभा होगी । आसमान को छूती उसकी उचांई । और इतना सुंदर था कि देखने वाले देखते रह जाते । फ्लेट में हजारो लोग रहते । ऊपर जाने-आने के लिए चार लिफ्ट रखे थे । सारे दिन आवन-जावन रहती थी। वह विशाल मकान जिस नगरी में था उसका नाम मायानगरी था ।

इस मकान में एक बार दो मित्र आये । फ्लेट का मालिक अपने मित्र को घर दिखाने लाया था । किन्तु उनके दुर्भाग्य से लिफ्ट बंध थी । फिर पता लगाकी चारो लिफ्ट बंध है। अब क्या करें ? दोनो मित्र सोचने लगे । ८० वे मंजिल पर सुंदर मकान था । और लिफ्ट बंध । हाथ में भारी सामान भी था ।

धीरे धीरे सीढी चढे तो पहुंच जायेंगे । दोनो मित्र सीढी चढने लगे । बीसवीं मंजिल तक पहुँचते वे थक कर लोत-पोत हो गये । सीढी पर ही वे बैठ गये । अब क्या करें ? मेरी ऊपर चढने की ताकात ही नही है । तब दूसरे मित्र ने कहा किन्तु ऊपर तो पहुँचना पडेगा तो ही मकान देख पायेंगें ? अगर सामान भारी हो तो हम यह सामान इसी मंजिल पर छोड देते है । यह विचार सुंदर है । चलिये तो इसी प्रकार करते है । २० वीं मंजिल पर सामान रख वे सीढी चढने लगे । ४० वीं मंजिल पर पहुंचते आंखं के आगे अंधेरा छा गया ।

दूसरे मित्र से नहीं सहा गया । अरे! दोस्त तूं मुझे कहाँ ले कर आया ? मै तो थक गया । अब मुझे ऊपर नही जाना । यजमान मित्र ने कहा आधे तो आ गये । ऊपर जा कर मजे ही करने है । बहुत समझा कर उसे तैयार करने के तत्पश्चात लडते - झगडते ६० वी मंजिल पर पहुंचे । किन्तुं अब तो पैर भी नहीं बढ रहे थे। बोलते हुए होफ रहे थे । सांस तेज हो गई थी । थोडी देर आराम करने के बाद वे फिर ऊपर चढने लगे । एक-दूसरे का सहारा लेकर वे आखीरकार ८० वें मंजील पर पहुंचे। अपने घर के आगे पहुंचते ही मकान मालिक को याद आयी की चाबी नीचे २० वे मंजिल पर बेग मे रह गयी । अब क्या !! दोनो मित्र एक-दूसरे को आंख फाड कर देखते रहे। जैसे जिंदगी की हिमालय जैसी भूल का पश्चाताप कर रहे है ।

सज्जनो । यह जगत मायानगरी है। इसमें सौ मंजिल का मकान अर्थात सौ वर्ष का जीवन । अर्थात मनुष्य चाबी बीसवी मंजील पर छोड कर जीवनयात्रा प्रारंभ करते है । जीवन का ध्येय बीस वर्ष की उम्र में भटक कर मात्र मौज-मस्ती में डूब जाते है । और थक जाते है । फिर ८० वर्ष की उम्र में याद आता है कि वे चाबी भूल गये है । कौन सी चाबी । मोक्ष की चाबी । लेकिन फिर पछतावे के सिवा कुछ नही रहता है । इस लिये श्रीजी महाराजने कहा वर्षो-वर्ष अपने कर्मो का जोड करना चाहिये ।

युवानी में मौत ।

- शास्त्री ह. जी. स्वामी (गांधीनगर)

जर्मनी में व्हीटेलीअस नामका राजा हो गया । भर युवानी में उस पर राज्य कारभार का बोझा आ गया । परंतु सुंदर काज चला रहा था । प्रजाको किसी चीज की कमी नहीं होने देता । इस लिए उसके शासनकी सराहना कि जाने लगी । प्रजा में वह लोकप्रिय बन गया । राज्य तथा प्रजा पर संपूर्ण अंकुश था । परंतु उसे एक चीज पर अंकुश नही था । इसलिए जीवन हार गया ।

वह जीवन हार गया उसका एक मात्र कारण उसकी जीभ थी । जीभ के ऊपर उसका अंकुश नही था । कोई भी स्वादिष्ट चीज देख ललचाता। खाने का कोई नियम नहीं था । भूखे की तरह वह खाने पर टूट पडता । इतना सारा खाना पचेगा या नही ? खाने से नुकसान होगा या नही उसकी परवाह उसने कभी नही की थी । बस स्वादिष्ट पकवान का गुलाम था । खाने की सुंदर चीज वह सीधा पेट में डाल देता ।

राज परिवार में खाने की क्या कमी होगी । उसका रसोइया भी खूब कुशल था । वह राजा को हररोज स्वादिष्ट भोजन बना कर खिलाता । राजा को भिन्न देशो के पकवान खाने की इच्छा हुई । और रसोइया सभी पकवान बनाये । हररोज नये पकवान राजा की थाली में आते । फिर भी सुंदर पकवान खाने की महेच्छा बढती रहती । उसे हरपल असंतोष रहता की मैं ठीक से नही खा पाता हूं । यदि पेट जल्दी न भरता तो कितना सुंदर होता ।

बस फिर क्या उसे ज्यादा भोजन करने का भूत सवार हुवा । और उसने अपने राजवैद्य को बुलाया । कहा "कि हे वैद्य । कोई ऐसी औषधि है जिससे इच्छानुसार भोजन कर पाऊ?" तब वैद्यराज मन में हंसकर बोले इसका कोई मार्ग नही है । तब राजा ने कहा कोई मार्ग तो होगा" तब वैद्यजी ने कहा की आप मनपसंद चीज खा कर यह दवा लें आपको वमन (उल्टी) होगी फिर पेट खाली हो जायेगा । फिर खाना और फिर इस प्रकार करना । आपकी इच्छा हो तबतक यह क्रम चालू रखना ।

यह सुझाव राजा को अच्छा लगा । जब वह खाने बैठते तब वे वमन का पात्र साथ रखते । ऐसा हररोज करते । कहावत है कि "रोगे भोग भयम्" जितने ज्यादा भोग उतने ही रोग । इसी कृत्रिम भोग अशास्त्रीय आहार-विहार के कारण राजा जवानी में ही रोगयुक्त हो गये । और घुट घुट कर मरे ।

सज्जनो । देखा शासन पर अंकुश हो लेकीन जीभ पर न हो तो कैसी परिस्थिति होती है । खाने-पीने के शोखीन लोग कैसाभी बाजारु भोजन पेट मे डाल तन के साथ मन कोभी बिगाडते है । किन्तु याद रखिये हम जीने के लिये खाते है खाने के लिये जीते नही । इतना याद रखो घर के पवित्र तथा प्रसादीस्वरूप भोजन से तृप्त हो जायेगें ।

बडे की बात बडी

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

चलना शीखे हुए बालक नें अपनी छाया देखी । उसे वह अजीब लगा । जब वह हिलता तो वह छाया भी हिलती । फिर वह उसे पकडने का प्रयास करने लगा । जैसे वह पकडने के लिए आगे बढता वैसे पडछायी दूर जाती । उसने खूब मेहनत की किन्तु न पकड पाया । "बालानां रोदनं बलं के मुताबिक रोना शुरु किया । यह सब उसकी माता देख रही थी । तब दौड कर आयी और बालक का हाथ पकड उसके मस्तक पर रखा और फिर यह देख बालक खुशीपूर्वक हंसने लगा । इस प्रकार अज्ञानी मनुष्य बालक की भांती छाया पकडने का प्रयास करते हैं लेंकिन कुछ नही मिलता । छाया का मूल पकडो तो छाया पकड में आयेगी ।

बडे मनुष्य कैसे होते है ।

ग्रीष्मऋतु की एक शाम को एक राजा नौकर के साथ बाग में धूमने गया । वहाँ एक आम के पेड के नीचे खुल्ला सर (मस्तक) कर एक स्थान पर बैठे थे । बाग के अगल-बगल दीवालो के कारण कोई अंदर देख नही पाता । अब ऐसा हुवा की रास्ते पर कुछ मुसाफिर जा रहे थे वे बहुत दिन के भूखे थे और वे आम के पेड पर आम देख खाने की इच्छा किये । एक पथ्थर फेंकने पर दो आम नीचे गीरे किन्तु वह पथ्थर राजा को लगा । सिपाही तुरन्त बाहर जा कर राजा के समक्ष खडा किया । राजा के पूछने पर उन्होने कहा कि हम गरीब है । हमारा गांव यहां से दूर है । हमे भूख लगी थी इस लिए पत्थर फेंका शत्रुता से नही । तब राजाने पूछा कितने आम मिले तब वे बोले दो तब राजाने कहा अगर यह निर्जीव पेड आपको दो आम दे शकता है तो मैं क्यो नही दे शकता? यह कह कर उन मुसाफिरो को भोजन करवा कर धन देकर विदा किया ।

चंदन घिसने पर ही सुंगंध देता है। गन्ना को पीसने पर ही मीठा रस देता है । इस प्रकार सदगुणी मनुष्य कष्ट सहन कर दूसरो को सुख देता है ।

षष्टि पूर्ति महोत्सव में ब्राह्मण बटुको को मंदिर की तरफ से यज्ञोपवित

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्टि पूर्ति महोत्सव में अंगभूत ब्राह्मण बटुको का यज्ञोपवित का कार्यक्रम दि. ६-४-०४ को संपन्न होगा । इसमें लाभ लेना चाहते ब्राह्मण बटुको के माता पिता अमदावाद मंदिर से फोर्म लेकर भर दे । *- महंत स्वामी*

हरिभक्तों की विशाल रैली के साथ धूमधाम से नारायणपुरा पहुंची थी ।

तुलसी विवाह में भगवान के पक्ष के यजमान रावजीभाई विरजी भाई पटेल परिवार तथा कन्या पक्ष के यजमान गं. स्व. हेरावदन अंबालाल पटेल (मोरवासड वाली) बनी थी । प.पू.लालजी महाराजने सभाजन को आशीर्वाद दिया तथा प.पू.आचार्य महाराजश्री तुलसी विवाह की आरती उतारे थे ।

इस अवसर पर अहमदावाद मंदिर के महन्त शा.स्वा.निर्गुणदासजी नारायणपुरा मंदिर के महन्त शा. स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी नारायणघाट के महन्त घनश्याम स्वामी तथा प.भ. जयन्तीभाई पटेल इस प्रकार सभी लोगों ने प.पू.आचार्य महाराज श्री की षष्टिपूर्ति महोत्सव में तन-मन -धन से सेवा करने की बात की । बाद में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने इस उत्सव को सभी का उत्सव है क्योंकि यहां पर श्री हरि के सम्पूर्ण लीला का संग्रहस्थान बनाया जायेगा जिससे एकही स्थल पर सम्पूर्ण झांकी का दर्शन हो सके ऐसा सभीको आशीर्वाद दिया ।

- कनुभाई पटेल

गांधीनगर सेक्टर-२३ में अपने मंदिर का रजत जयन्ती महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न किया गया

गांधीनगर सेक्टर-२३ में अपने मंदिर का रजत जयन्ती महोत्सव धूमधाम से सम्पन्न किया गया ।

परम कृपालु इष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से अपने सम्प्रदाय का गौरव गुजरात राज्य की राजधानी गांधीनगर में सर्व प्रथम मंदिर का निर्माण हुआ था । जिसकी वि.सं.२०३५ वैशाख शुक्लपक्ष ४ ता. ३०-४-१९७९ के शुभदिन प.पू. आचार्य महाराज के शुभ हाथो से प्राण प्रतिष्ठा धूमधाम से की गयी थी । तबसे आजतक भगवान को प्रतिष्ठित हुए २५ वर्ष पूर्ण हो गये ।

मंदिर के रजत जयंती महोत्सव पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. स्वामी हरिकेशवदास की प्रेरणा से पांच दिन का सुन्दर कार्यक्रम किया गया था । इस प्रकार विविध कार्यक्रम किये गये जिसमें तीनदिन तक विना मूल्य का आरोग्य कैम्प रखा गया था प्रायः एक हजार से अधिक रोगियों नें लाभ लिया था । सभी को मुफ्त में दवा दी गयी थी ।

प्रतिदिन सायंकाल सत्संग गोष्ठी का आयोजन किया जाता था ।

जिसमें शा. स्वा. हरिकेशवदासजी बालको के जीवनोपयोगी प्रसंग पर प्रेरणादायी कथा सुनाये थे । जिसे सुनकर श्रोता लोग धन्य हो गये थे ।

बादमें मंगल होमात्मक महापूजा का आयोजन किया गया था । जिसमें सैकडो हरिभक्तो ने भाग लिया था । प्रतिदिन रात्रि में सास्कृतिक कार्यक्रम किया जाता था । बहनो के कार्यक्रम में "संसार में स्वर्ग" का भी आयोजन किया गया ।

ता. २८-१२-०३ के समापन कार्यक्रम में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आगमन से अत्यानंद की अनुभूति हुई थी । महाराजश्री ने ठाकुरजी की आरती उतारी थी । शास्त्र की पूजा करने के बाद सभा में बिराजमान हुए थे । गांधीनगर सत्संग समाज के अग्रणी प.पू.आचार्य महाराजश्रीकी षष्टिपूर्ति के लिए ६० ज्योति की आरती से आरती उतारे थे ।

बाद में पू.महाराजश्री की आज्ञा से शा. स्वामी हरिकेशवदासजी द्वारा लिखित "श्रीमद भागवत कथासार" का पू. महाराजश्री के हाथो से विमोचन किया गया ।

सभा में अहमदावाद मंदिर के महंत शा.स्वामी निर्गुणदासजी जेतलपुर के पू. शा. पी.पी. स्वामी, शास्त्री केशवप्रसाददासजी, शास्त्री हरिजीवनदासजी, स.गु. रघुवीर स्वामी अहमदावाद के कथाकार संत घनश्यामचरणदासजी इत्यादि संतो नें उदबोधन किया था । प.पू. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा था कि "श्री नरनारायण देव की छत्र-छाया में शा. स्वामी हरिकेशवदासजी की जो प्रवृत्ति हो रही है वह अविरत चालू रहे इसीके साथ मंदिर के महोत्सव प्रसंग पर छपी हुई आमंत्रण पत्रिका की प्रशंसा करते हुए कहे कि "प्रत्येक को प्रेरणा लेने जैसी यह पत्रिका है" । शास्त्री हरि स्वामी सभा संचालन किये ।

इस प्रसंग पर हजारों हरिभक्त उपस्थित रहे । महोत्सव के मुख्य यजमान श्री लक्ष्मणभाई नारायणदास पटेल थे । राजकीय परिस्थिति से युक्त इस नगर में पू. महाराजश्री का आगमन तथा आशीर्वाद सुनकर एवं नाना प्रकार के कार्यक्रमों का दर्शन करकें भक्ति की, सत्संग की, तथा आनंद की लहर फैल गयी थी । इस महोत्सव के कार्यक्रम की रुपरेखा स्थानिक समाचार पत्रो में विस्तृत दी गयी थी । अन्त में भगवान का प्रसाद लेकर सभी लोग स्वस्थान गमन किये थे ।

दिव्य तीर्थधाम जेतलपुर मंदिरमें धनुर्मास में धुन महोत्सव

सर्वोपरि श्री हरि के दिव्यचरणों के रजकण से जिसमें प्रताप भरा है ऐसे महानतीर्थ में सर्वोपरि श्री रेवतीबलदेवजी श्री हरिकृष्ण महाराज

के शुभ सांनिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. भावी आचार्य लालजी महाराज श्री की आज्ञा से तथा स.गु. महन्त शा.स्वामी. आत्मप्रकाशदासजी तथा महन्त के. पो. स्वामी. की प्रेरणा से संत मंडल तथा जेतलपुर पाठशाला के विधार्थी गण मिलकर दिव्य सभामंडल तथा जेतलपुर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल एवं अक्षरमहोल बाडी संस्कृत पाठशाला के विध्यार्थी गण मिलकर दिव्य सभामंडप में प्रातःकाल में श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन को संगीत के ताल में गाते हैं तब अगल बगल के समग्रवातावरण में दिव्यता प्रसर जाती है । ग्रामजन तथा अगल बगल के गांवो के हरिभक्त जन धुन का लाभ लेने आते हैं । जेतलपुर गुरुकुल के विधार्थी भी अवकाश के दिन धुन में लाभ लेने आते है। इस प्रकार मंदिर में धनुर्मास में श्री हरि के स्मरण का लाभ यहां के हरिभक्त लोग ले रहे है ।

- पुजारी. स्वामी. व्रजवल्लभदासीज

षष्टि पूर्ति के उपलक्ष्य में ईडर देश के लालोडा गाँव में ज्ञान यज्ञ

सर्वोपरि श्री हरि की प्रसन्नता हेतु तथा उन्ही के अपर स्वरूप प.पू. आचार्य महाराजश्री की षष्टिपूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में भावी आचार्य प. पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से ईडर देश के लालोडा श्री स्वामिनारायण मंदिर के महंत घनश्याम जीवनदासजी अपने संत मंडल के सहकार से गांव के हरिभक्तों को कथा का लाभ मिलें इस हेतु से ता. ६-१२-०३ से ता. १२-१२-०३ पर्यन्त श्रीमद् सत्संगिभूषण सप्ताह पारायण का आयोजन किये थे । स. गु. शा. स्वामी हरिजीवनदासजी गुरु शा. स्वामी हरिकेशवदासजी के वक्तापद पर धूमधाम से सम्पन्न किया गया ।

संहिता पाठ के वक्ता छपैयाप्रसाद स्वामी थे ।

प. भ. जेठाभाई के निवास स्थान से गाजे बाजे के साथ पोथीयात्रा कथा मंडप तक आयी थी ।

ता. १२-१२-०३ पूर्णाहुति के दिन प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री गांव में पधारे उस समय संत-हरिभक्तो नें खूब स्वागत किया ।

प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री ने मंदिर में भगवान की आरती उतारकर कथा मंडप में पूर्णाहुति की आरती उतारी थी । पू. घनश्यामजीवनदासजी प. पू. ध. धु. आचार्य महाराज का फूलहार से स्वागत किये । बाद में संत हरिभक्तों का सम्मान किया गया और पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिया ।

इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर से पू. महंत शा. स्वामी. निर्गुणदासजी, पू. शास्त्री स्वामी हरिकेशवदास, पू. पी. पी. स्वामी आदि विद्वान संतो ने प्रेरणात्मक उदबोधन दिया तथा षष्ठि पूर्ति की स्मरेखा समझाये ।

बाद में प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए महंत स्वामी. घनश्यामजीवन दासजी तथा उनके शिष्य एवं आयोजन में मुख्य सेवा देने वाले विश्वप्रकाशदासजी आशीर्वाद दिये । महंत स्वामी के शिष्य को सदगुरु की उपाधि प्रदान किये । शा. स्वामी हरिप्रियदासजी तथा अमृतभाई पटेल ने सभा संचालन किया। सभा में षष्टिपूर्ति महोत्सव में तन-मन-धन से सेवा करने की घोषणा की गयी । बहनों को दर्शन का लाभ देने हेतु प. पू. गादीवावा पदार्पण की थीं । धर्मकुल के निवास की व्यवस्था देवचंद्रभाई के यहां की गयी थी । सात दिन तक सभी को प्रसाद लेने की व्यवस्था की गयी थी ।

इस प्रसंग पर - अहमदाबाद, जेतलपुर, कांकरिया, नारायणघाट, गांधीनगर, इडर, सापावाडा, बीलीया, इत्यादि गुरु कुल के तथा अन्य मंदिरो से ५० जितने सन्त पधारे थे ।

- श्री घनश्याम मंडल

ईश्वरपुरा में श्रीमद् सत्संगिभूषण पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प. पू. लालजी महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा कृष्णस्वरूपदासजी (काका स्वामी) की दिव्य प्रेरणा से प. भ. गलबाभाई जोराभाई चौधरी परिवार के शुभ संकल्प से श्री हरि प्रसन्नार्थ ता. १३-१२-०३ से ता. १७-१२-०३ तक श्रीमद सत्संगिभूषण का पंचाहन पारायण शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ था । ता. १७-१२-०३ पूर्णाहुति के दिन प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री जब पधारे उस समय गांव के हरिभक्त एवं सन्तो नें भावपूर्ण स्वागत किया था । प. पू. आचार्य महाराजश्री मंदिर में ठाकुरजी की आरती उतारकर कथा में पधारे थे । यजमान परिवार प. पू. आचार्य महाराज श्री का पूजन अर्चन करके आरती उतारे थे । सभा में शा. हरिकृष्णदासजी स्वामी देवप्रकाशदासजी आनंदप्रियदासजी, इत्यादि संतो ने यजमान परिवार की खूब प्रशंसा की तथा षष्टि पूर्ति महोत्सव को अच्छी तरह करने की जानकारी दी । बाद में सभाजन को पू. महाराजश्रीने आशीर्वाद दिया ।

वरोसडा गाँव के मंदिर में प. पू. ध. धु. आचार्य महाराज श्री दर्शन हेतु

पधारे थे । मंदिर का सुन्दर सिंहासन प्रसादी की मूर्ति देखकर खूब प्रसन्न हुए । गांव में सत्संग की वृद्धि हेतु आशीर्वाद दीये ।

बदपुरा गाँव के हरिभक्तों नें बडी संख्या में हरि नाम स्मरण के साथ गांव में प्रभात फेरी का आयोजन किया । *-नाना पी.पी.स्वामी*

धरमपुर में सत्संग सभा

प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की षष्टिपूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में प. पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से महंत स्वामी नीलकंठदासजी तथा भक्तवल्लभदासजी ने सत्संग सभा का आयोजन किया । जिस उत्सव में धर्मकुल का माहात्म्य समझाया गया।

- कोठारी श्री

वेडागोविंदपुरा में सभा

प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपक्रम में भक्तवत्सलदासजीने प. पू. आचार्य महाराज श्री के ६० वर्ष के सत्संग की अनेक प्रवृत्तियों को बताया तथा व्यसन से मुक्त रहकर देव-आचार्य सन्त का पक्ष रखना इस पर सुन्दर बात की ।

- साधु वंदनप्रकाशदास

कालीयानामें ६० घन्टे की धुन (ता. विरमगाम)

प. पूज्या लक्ष्मीस्वरु पा अ. सौ. गादीवाला श्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा बाईयो के मंदिर की सांख्ययोगी बबूवा की प्रेरणा से ६० घन्टे की धुन का आयोजन, सवा लाख जनमंगल का पाठ प. पू. आचार्य महाराज की षष्टि पूर्ति के उपलक्ष्य में किया गया। धनुर्मास में प्रातः प्रभातफेरी धुन-कीर्तन इत्यादि दोनों मंदिर में किया गया । प. भ. कोठारी श्री डाह्याभाई बुटिया, भीखुभाई गांव के सभी हरिभक्त धार्मिक प्रवृत्ति में जुडते है ।

- अरजडभाई गो. मोरी

कानोर तथा मेनार (राजस्थान) में सत्संग सभा

प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में प. पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से पूज्य पी. पी. स्वामी. की प्रेरणा से ता. ८-९-०३ के दिन धरियावद के महन्त स्वामी. ईश्वरजीवनदासजी तथा शा. भक्तिनन्दनदासजी इस सभा का आयोजन करके गांव के लोंगो को सर्वोपरिता की परम्परा को समझाया तथा श्री नरनारायणदेव गादि संस्थान की महिमा एवं प. पू. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति की रूपरेखा समझायी गयी । श्री हेमंतभाई सोनी नें इस अवसर पर उत्तम सेवा की ।

इसीप्रकार मेनार गांव में ता. ११-१२-२००३ के दिन महंत स्वामी. ईश्वरजीवनदासजी, भक्तिनंदनदासजी ने षष्टि पूर्ति महोत्सव मनाते हेतु सभी को तन-मन-धन से सेवा करने की बात कही । यहां के सत्संग में जागृति खूब है। श्री लक्ष्मीचंद साहब नें सत्संग सभा का आयोजन किया था । *-सा. भक्तिनंदनदासजी*

हिंमतनगर मंदिर में वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

प. पू. महाराज श्री के आशीर्वाद से शा. स्वामी आनंदजीवनदासजी की प्रेरणा से ठाकुरजी का १४ वां वार्षिकोत्सव ता. १९-११-०३ के दिन स्वामी धर्मकिशोरदासजी के मार्गदर्शन में धूमधाम से मनाया गया । पाटोत्सव के यजमान प. भ. विजय मोदी तथा निलेशभाई थे ।

षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में हिंमतनगर सें प्रांतीज तक पदयात्रा का आयोजन स्वामी हरिप्रकाशदासजीनें किया । जिसमें सन्त हरिभक्त बडी संख्या में उपस्थित रहे । सेवा का लाभ कलोल के किरीटभाई तथा दिलीपभाई ने लिया ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल

प्रतापपुरा (बालवा)

प्रतापपुरा गांव में प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में प. पू. भावी आचार्य लालजी महाराजश्री की आज्ञा से श्री नरनारायण युवक मंडल प्रति रविवार को सभा का आयोजन करके सर्वोपरिता का माहात्म्य तथा धर्मकुल का माहात्म्य समझाते है। अगल बगल के गाँव में भी सभा करके युवानों को नयी प्रेरणा देकर सभी को सत्संगी बनाकर व्यसन से मुक्त करते हैं । बालकों के लिये बालमंडली की स्थापन की गयी है। श्री स्वामिनारायण मासिक का ५ वंशपरंम्परागत तथा ६ वार्षिक सभ्य बनाकर सुन्दर प्रचार किया जा रहा है। प्रतापपुरा युवक मंडल की प्रवृत्ति खूब प्रशंसनीय है । *- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, प्रतापुरा)*

भवपुरा (ता. कडी) में षष्ठि पूर्ति की सभा

प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की आगमी षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में गाँवो में प्रचार तथा सभा का आयोजन नरनारयण मंडल तथा सन्तों द्वारा हो रही है। २४-११-०३ के दिन भवपुरा की सभा में प. पू. लालजी महाराज ने प्रातः ८-३० बजे पदार्पण किया उस समय गांव के बाहर से धूम धाम के साथ स्वागत का आयोजन किया गया था। इस सभा का आयोजन जेतलपुर के पू. पी.पी. स्वामी द्वारा किया गया था । गांव के हरिभक्तों ने षष्ठि पूर्ति महोत्सव में करीब तीन लाख से भी अधिक सेवा हेतु नाम उद्धोषित

किया था । श्री नरनारायण युवक मंडल भवपुरा की लालजी महाराज नें खूब प्रशंसा की थी ।

- के. पी. स्वामी, जेतलपुर महंत

सीतापुर पाटोत्सव प्रसंग पर सभा

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में सीतापुर मे सत्संग सभा हुई थी ।

सीतापुर गाँव के हरिमंदिर के पाटोत्सव को ध्यान में रख कर प.पू.लालजी महाराजश्री पधारे थे । दि. २६-११-०३ को कार्यक्रम रखा गया था । सीतापुर के हरिभक्तो ने षष्ठि पूर्ति महोत्सव में साढ़े तीन लाख स्मयो की सेवा की थी । इस प्रसंग पर जेतलपुर से आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी संत मंडल के साथ पधारे थे । कोठारी बलदेवभाई और अमदावाद से रसिकभाई सोनी पधारे थे । तथा षष्ठि पूर्ति महोत्सव में मुख्य खजानची के पद पर रसिकभाई सोनी की प.पू. लालजी महाराजश्री ने नियुक्त किया था ।

- के. पी. स्वामी जेतलपुर महंत

धनुर्मास में धर्मपुत्र का वडनगर में आगमन

यहां वडनगर में सर्वोपरि श्री हरि की कृपा से श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु आचार्यश्री १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा आशीर्वाद से महंत स.गु. स्वामी हरिसेवादासजी की तरफ से दि. १२-१२-०३ से १६-१२-०३ पर्यन्त श्रीमद सत्संगिजीवन पारायण ज्ञानयज्ञ महंत शा. स्वामी. धर्मवल्लभदासजी (उनावा) तथा कोठारी स.गु. स्वामी. विश्वप्रकासदासजी के वक्तापद पर धामधूम से संपन्न हुई थी ।

दि. १६-१२-०३ को प.पू.ध.धू. आचार्य महाराजश्री पधारे तब उन्हो ने ठाकुरजी की आरती कर । ग्रामजनो के दर्शन हेतु सुंदर रथ में बिराजमान हुये ।

फिर पारायण की पूर्णाहुति की आरती कर सभा में बिराजमान हुए । शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर गुरुकुल संचालक) ने उनके गुरु स.गु.स्वामी हरिकेशवदासजी का संकल्प साकार होते हुए बताया तथा स.गु.स्वा. हरिसेवादासजीने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आरती उतार कर आशीर्वाद प्राप्त किये । इस अवसर पर बडी संख्या में हरिभक्त आये थे ।

अमदावाद मंदिर के महंत शा. स्वामी निर्गुणदासजी, शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा मूळी के संतोने स्वामीके सेवा की प्रशंसा की थी । प.भ.नविनभाई मोदी ने धर्मकुल की महिमा बतायी थी । मुख्य मंत्री श्री नरेन्द भाई मोदी के बडे भाई प.भ.सोमाभाई तथा नगरपालिका के प्रमुख प.भ.जसुभाई भी उपस्थित रहे थे । अंत में आचार्यश्री सबको आशीर्वाद देकर अति प्रशन्न हुये थे ।

- शा.स्वामी.विश्वप्रकाशदासीज, वडनगर

थोबाउ (राजस्थान)

थोबाउ के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.घ.धु.आचार्य महाराजश्री की षष्ठी पूर्ति के उपलक्ष्य में २१-१२-२००३ को महापूजा का आयोजन किया गया था ।

वाली (राजस्थान)

यहां के श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के षष्ठी पूर्ति के उपलक्ष्य में २१-१२-२००३ को आखो की जांच का केम्प नि:शुल्क रखा गया था । जिसका हरिभक्तो ने लाभ लिया ।

वापा (राजस्थान)

यहां के हरिभक्तो ने साथ मिलकर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की षष्ठि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में दि. २९-११-०३ को महापूजन का आयोजन किया गया था ।

- केवाराम सुथार तथा ढियाराम सोनी

ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी केळवणी ट्रस्ट द्वारा संचालित श्री सहजानंद प्राथमिक विद्यामंदिर का गौरव

गुजरात राज्यकक्षा पर आयोजित उर्जा महोत्सव में सायन्टीफिक मोडल में अपने छात्र ने तृतीय स्थान तथा ग्रीन शोप्स में द्वितीय स्थान प्राप्त किया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में विधार्थियोने श्रेष्ठ कार्य कर स्कुल का नाम बढाया है ।- *आचार्य सुरेखा बहन*

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

जसापर (तां. ध्रांगध्रा)

यहां श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धू.आचार्य महाराजश्री की तथा प.पू.लालजी महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से बहनो के नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ५-१२-०३ से ९-१२-०३ पर्यन्त श्रीमद सत्संगिभूषण पारायण स्वामी रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर सुंदर प्रकार से हुई थी । फिर तीन दिन के हरियाग का आयोजन किया गया था । ९-१२-०३ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से मंदिर में ठाकुरजी की प्राणप्रतिष्ठा तथा पारायण तथा हरियाग की पूर्णाहुति की गयी

थी। संहिता पाठ के वक्तापद पर साधु दिव्यप्रकाशदास थे । इस सभा का संचालन पुजारी स्वामी भक्तिप्रकाशदासजी ने किया था ।

- साधु निलकंठप्रसाददास

रामगढ (धांगध्रा)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज श्री के षष्ठी पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में रामगढ श्री स्वामिनारायण मंदिर के ४९ वें वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर पांच दिन की सत्संग शिबिर का आयोजन किया गया था । अ. नि.स.गु. स्वामी विज्ञानदासजी के शिष्य मंडल ने कथा वार्ता, धून-भजन का आयोजन किया था । समूह महापूजा में हरिभक्तो ने लाभ लिया था ।

मूली की महाप्रसादीभूत ज्ञान बावडी पर शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. अचार्य महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स.गु.स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से सुरेन्द्रनगर मंदिर सत्संग समाज, मोरबी सत्संग समाज की तरफ से दि. २३-१२-०३ को प्रसादी की ज्ञान बावडी पर भव्य शाकोत्सव का आयोजन किया गया था । जिसमें मूली देश के ५००० हरिभक्त पधारे थे । और इस समग्र प्रसंग का संचालन प्रेमवल्लभदासजी ने किया था ।

सुरेन्द्रनगर मंदिर में सत्संगिजीवन पारायण

प.पू. अ.सौ. लक्ष्मीस्वरूपा गादीवालाश्री की शुभ आर्शीवादात्मक आज्ञा से यहां के मंदिर की सां.यो.कमणाबा, सां.यो. कोकीला बा तथा उषाबा की प्रेरणा से कपडवंज की किर्तीबहन के यजमान पद पर ९-१२-०३ से पर्यन्त श्रीमद सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण का आयोजन किया गया था । जिसका सत्संग समाज ने लाभ लिया था । इस प्रसंग पर आशीर्वाद देने सारायू सत्संग समाज ने लाभ लिया था । इस प्रसंग पर गादीवाळा पधारी थी । इस प्रसंग का संचालन प्रेमवल्लभदासजी ने किया था ।

- शैलेन्द्रसिंह झाला

भक्तिनगर (हळवद)

यहां प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में स्वामी श्रीजी स्वरूपदास, भक्तिस्वामी, तथा विश्वविहारीदास ने कथा-वार्ता द्वारा धर्मकुल माहात्म्य तथा षष्टी पूर्ति महोत्सव की रूपरेखा बताई थी । तथा भक्तो को अलग- अलग नियम दिये थे । *- गोपाल तथा निलकंठ स्वामी*

लीलापुर गाँव में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री के षष्टि पूर्ति महोत्सव के उपलक्ष्य में २२-१२-२००३ को सत्संग सभा का आयोजन किया था । जिसमें स्वामी विश्वविहारीदास, स्वामी भक्तिविहारीदास, स्वामी हरिचरण तथा निलकंठस्वामी ने कथा -वार्ता कर बहुत हरिभक्तो को नियम दिलवाये थे । यहां के हरिभक्त उन पर बहुत खुश हुए थे ।

प्रयागराज (अल्हाबाद) में श्री नरनारायणदेव गादी हस्तक मंदिर तथा उतारा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य प. पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-कृपा से तीर्थ प्रयाग में अपना श्री स्वामिनारायण मंदिर तथा यात्रियों के लिये उतारा की सुंदर व्यवस्था उपलब्ध है । जिससे देश-विदेश से तीर्थयात्रा के लिए आने वाले हरिभक्तो को यही रुकने का आग्रह रखना । प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री ने स. गु. नारायणस्वरूपदास को महंतपद दिया है ।

महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर,
महात्मागांधी रोड, के. पी. कोलेज के सामने इलहाबाद (प्रयाग)
फोन : (०५३२) ६०४९१४

विदेश सत्संग वृत्तान्त

स्ट्रेटधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O., U.K.)

यहां प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री तथा प. पू. लालजी महाराज के आशीर्वाद से २५-१०-०३ को दिव्य अन्नकुट उत्सव मनाया गया ।

दि. ९-११-०३ को तुलसी विवाह का सुंदर आयोजन किया गया था । जिसमें तुलसी माता के यजमान प. भ. रसिकभाई गोवरधनभाई पटेल तथा अ. सौ. तस्बहन रसिकभाई पटेल रहे थे ।

शालीग्राम (भगवान विष्णु) के यजमान अमदाबाद की गं. स्व. अन्नपूर्णाबहन रविशंकरभाई शुक्ल बने थे ।

प. पू. ध. धु. आचार्य महाराज की कृपा से सत्संग सुंदर चल रहा है ।

-डॉ. अमरसिंह गोहेल

लेस्टर श्री स्वामिनारायण मंदिर (I.S.S.O., U.K.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा भावि आचार्य प. पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा आशीर्वाद से १३-१२-०३ को समूह हनुमानचालीसा के १०८ पाठ सुबह १० से ६ के पर्यन्त किये थे । प.भ. रूडाभाई रामजी हिराणी परिवार यजमान बना था। बहुत बडी संख्या में हरिभक्तों ने उपस्थित होकर लाभ लिया था । इस प्रसंग पर श्री जयंतीभाई

पटेल ने यजमान परिवार का सन्मान किया था समग्र दिन हरिभक्तों की भीड रही थी । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज की कृपा से सत्संग सुंदर चल रहा है । *- हेमकाज चोटलीया*

क्राउली में सत्संग सभा

(I.S.S.O. Europe)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आर्शीवाद से लीयोनार्द चर्च होल में दिपोत्सवी सत्संग का आयोजन किया गया था । दि. २६-२७ अक्टुबर को इस उत्सव में श्री स्वामिनारायण भगवान, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव को अन्नकुट अर्पण कर हरिभक्तो ने भगवान को खुश किया था । दो घंटे के दैनिकोत्सव में भजन कीर्तन तथा समूह आरती की थी । दोनो दिन हरिभक्त खूब संख्या में आये थे । अंत में अन्नकुट महाप्रसाद दिया गया ।

टोरेन्टो (केनेडा)

• यहां प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा-आर्शीवाद से युवाचार्य प. पू. लालजी महाराज ने (I.S.S.O.) की तरफ से हर पंद्रह दिन पर सत्संग सभा होती है । श्री नरनारयणदेव में निष्ठा वाले हरिभक्त धर्मानुसार रहते है । नव वर्ष में अन्नकूट का आयोजन महेशभाई टांक के परिवार के निवास स्थान पर हुई थी । जिसमें बहुतलोग पधारे थे । भक्तो के महाप्रसाद का आयोजन हुवा था । यहां मंदिर बनाने का संकल्प प. पू. लालजी महाराज ने किया जो जल्द ही पूर्ण होगा । (और जानकारी अगले अंक में प्रकाशित होगी ।)

- महेशभाई टांक

बुवी मेरीलेन्ड (I.S.S.O., वोशिंग्टन चेप्टर)

यहां २२-११-०३ को शाम को तीन घंटे सत्संगी भाई बहनो ने भजन कीर्तन, वचनामृत वांचन, थाल, आरती नित्यनियम किया था । जिसका लाभ बहुत हरिभक्तो ने लिया । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की कृपा से सत्संग सुंदर चल रहा है । *- कनुभाई पटेल*

साभार स्वीकार

प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से स. गु. शा. स्वामी हरिकेशवदासजी (गांधीनगर) लिखित "श्रीमद भागवत कथासार" के नये प्रथम प्रकाशन का मंदिर के रजत जयंती के अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो से विमोचन की गयी थी । यह पुस्तक हरिभक्तो के वाचन मनन के लायक है । जो अहमदावाद के साहित्य केन्द्र पर मिलती है ।

अक्षरनिवासी हरिभक्तों को भाव पूर्वक श्रद्धांजलि

अहमदावाद :- श्री नरनारायणदेव के अनन्य हरिभक्त प. पू. ध. धु. आचार्य महाराजश्री के कृपापात्र तथा पू. ध्यानी स्वामी के आज्ञांकित हरिभक्त प. भ. शामणभाई गोवरधनभाई सोनी के पुत्र श्री केशुभाई सोनी (४२ वर्ष) दि. २२-१२-०३ को श्री हरि अखंड स्मरण करते हुवे अक्षरनिवासी हो गये है ।

डेमाई (जि. साबरकांठा) :- प.भ. नारायणभाई नायी ९५ वर्ष की उम्र में श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुवे तथा प. भ. प्रविणभाई विरमभाई ४२ वर्ष की कम उम्र में १६-११-०३ को श्रीहरि का स्मरण करते हुवे अक्षरनिवासी हुए ।

अमदावाद :- मूल मानकुवा (कच्छ) के तथा श्रीनरनारायणदेव के अनन्य आश्रित प. भ. मावजीभाई खडाभाई पांलाळी दि. ७-१२-०३ को ८४ वर्ष की उम्र में अक्षरनिवासी हो गये है । अमदावाद मंदिर तथा भुज के सत्संग को बहुत नुक्सान हुवा है । प्रभु उनकी आत्मा को शांति दे ।

ओकलेन्ड (न्युझीलेन्ड) :- श्री नरनरायणदेव के निष्ठावान सत्संगी तथा ओकलेन्ड (I.S.S.O.) के प्रमुख प. भ. जयंतीभाई पटेल की धर्म पत्नी अ.सो. चंद्रिकाबहन जोकि अ.सौ.प.पू. लक्ष्मीस्वस्रा गादीवाला के खूब कृपापात्र थी । वे वहां बीमारी की वजह से ११-१२-०३ को श्री हरि का अखंड स्मरण करते अक्षरनिवासी हो गई है । जिनके अक्षरवास से ओकलेन्ड के बहनो के सत्संग में बहुत कमी आयी है ।

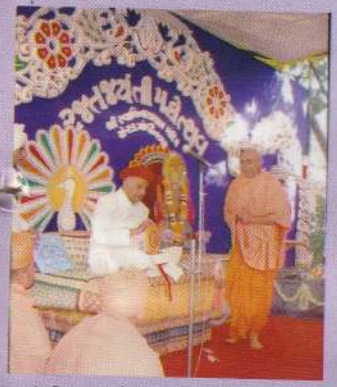


कानपुर (उ.प्र.) में श्री नरनारायणदेव गादी हस्तक शिखरबध्ध मंदिर की शीलान्यास विधि करते प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री साथ में लाभ लेते हुए भूमिदाता प.भ. श्री राजेन्द्रभाई पटेल, पू. पी.पी. स्वामी तथा महंत ब्र. स्वा. वासुदेवानंदजी ।



कानपुर (उ.प्र.) मे पू. महाराजश्री वी.एच.पी.के. खजानची श्री राजानाथ महेन्द्रजी को अहमदाबाद मंदिर का फोटो प्लान देकर सर्वोपरिता तथा माहात्म्य समजा रहे है साथ में मेयर श्री अनिल शर्मा, श्री तिवारी साहब (पू. लालजी महाराज के ससुर) तथा श्री तिवारी साहब (पू. लालजी महाराज के मामाश्री)



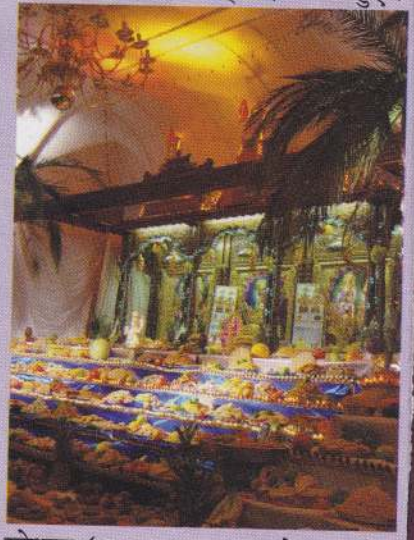


गांधीनगर सेकटर-२३ मंदिर के रजत जयंती अवसर पर' भागवत कथासार' का विमोचन करते प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री साथ में स.गु.शा. स्वामी हरिकेशवदासजी ।



पू. लालजी महाराजश्री ने टोरेन्टो (केनेडा) में I.S.S.O. की स्थापना कर यहाँ के सत्संग को दृढ बनाया । हरिभक्तो द्वारा दिपावली अन्नकुट दर्शन ।

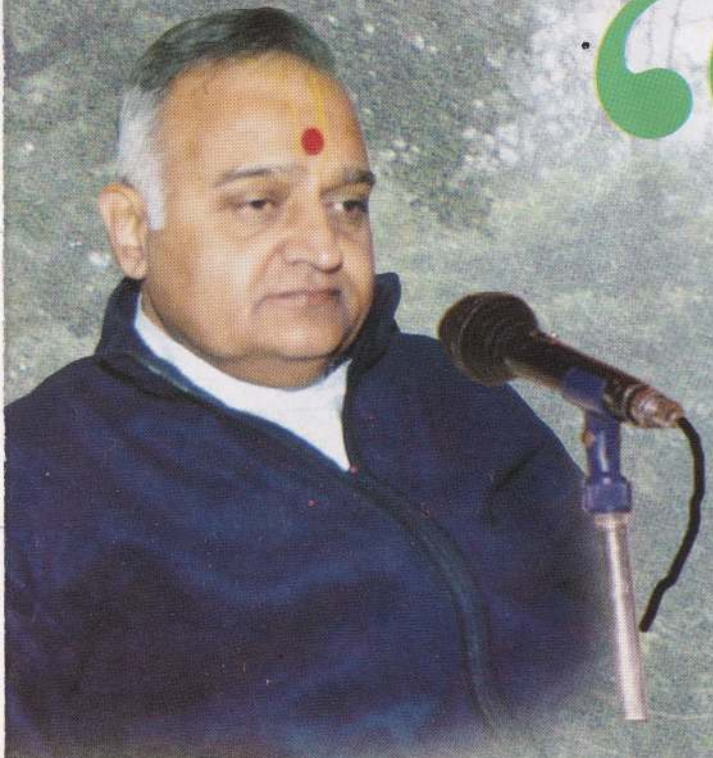
◁ लालोडा में पारायण अवसर पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिती में महंत स्वामी हरिजीवनदासजी उद्‌भोदन करते हुए ।



स्ट्रेधाम (I.S.S.O., U.K. चेप्टर) के मंदिर के अन्नकुट दर्शन ।



◁ ध.धु. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी केडवणी ट्रस्ट संलग्न श्री सहजानंद प्राथमिक विद्या मंदिर के विद्यार्थीयो ने गुजरात स्तर के उर्जा महोत्सव में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर उर्जामंत्रीश्री सौरभभाई शाह के हाथ से इनाम जीता ।



"स्कुल-कोलेज के अभ्यास के पश्चात एकेडमिक डीग्री (B.A., B.Sc. इत्यादी) मिली हो उसे कोई छीन नही शकता परंतु सर्वावतारी श्रीहरि की आज्ञा पालते हुए "सत्संगी" की डीग्री चालु रखने के लिये महाराज की आज्ञा का पालन करते रहना पडता है। यदि उसमे फर्क पडे तो सत्संगी की डीग्री छीन जाती है।"

Platinum Jubilee : 2-4-2004 to 8-4-2004

पू.पू.धर्मधु.आचार्य
१००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी
महाराजश्रीनो
षष्ठीपूर्ति महोत्सव

"JAY SHREE SWAMINARAYAN"
NOW TELECAST ON ZEE TV
EVERY SUNDAY U.S.A. 10:00 am (EST) & 8:00 am U.K. (EST)

Prafull Kharsati